RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 50/प्रकाशन तिथि 25मार्च 2020/ पोस्टिंग तिथि 29 मार्च

बाल विज्ञान पत्रिका, अप्रैल 2020

चकमक

मूल्य ₹50

चित्र: कनक शशि

अंक 403 • अप्रैल 2020

चकमक

इस बार

भूलभुलैया - 2
भले भेड़िये - चन्दन यादव - 4
कोरोना से हुए जंगली जानवर खुश - रोहन चक्रवर्ती- 6
नया कोरोना वायरस कहाँ से आया? - 7
आम का पना - प्रभुदयाल श्रीवास्तव - 8
नेमप्लेट - मुकेश मालवीय -9
गाय की पेशाब से बिजली - के आर शर्मा - 10
क्यों-क्यों - 11
किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी - 14
बहुत ज़ुकाम हुआ नन्दू को - रामनरेश त्रिपाठी - 19
काँव-काँव - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन - 20
भालू की मदद - पवन गुर्जर - 22
पक्की दोस्ती - मुदित श्रीवास्तव - 24
तुम भी जानो - 27
तुम्हारा घर सिर्फ तुम्हारा नहीं - मैथ्यू ऐलन बर्टोन -28
मेरा पन्ना - 32
माथापच्ची - 38
चित्रपहेली - 41
तीन हज़ार साल पुराना शव बोला - 42
बागीचे में आए बन्दर - हर्षवर्धन कुमार - 44

किट्टू उड़नछू!

मिल गया किट्टू

आवरण चित्र: सुविधा मिस्त्री

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

सहयोग
अभिषेक दूबे

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

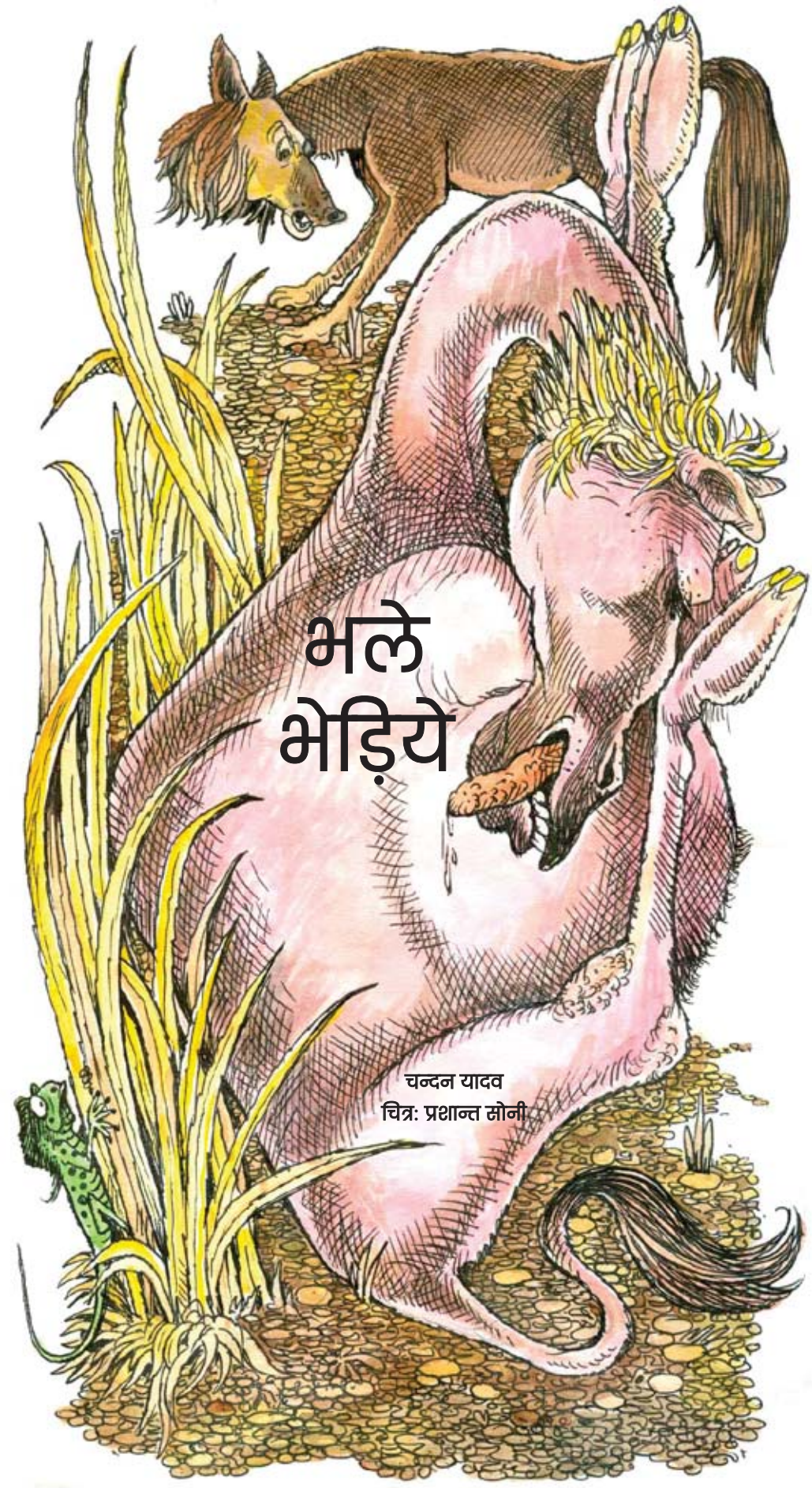

भले भेड़िये

चन्दन यादव
चित्र: प्रशान्त सोनी

गर्मियों की एक दोपहर किसी भेड़िये ने एक बेहोश पड़ा ऊँट देखा। उसने ऊँट पहली बार देखा था। वो भागा-भागा अपने झुण्ड के पास गया। उसने बताया कि नदी के पास एक बहुत बड़ा और अजीब-सा जानवर पड़ा हुआ है। सारे भेड़िये ऊँट के पास पहुँचे। इससे पहले उनमें से किसी ने भी ऊँट नहीं देखा था। चार पाँव, पूँछ और मुँह देखकर भेड़िये इतना भर समझ पाए कि यह भी किसी तरह का जानवर है। वे जैसे-तैसे खींच-खाँचकर बेहोश ऊँट को घर ले आए।

सारे भेड़िये उसे घेरकर बैठ गए और मुआयना करने लगे। सब उसके पाँव, पूँछ, मुँह और कूबड़ को छू-छूकर देख रहे थे। एक बुज़ुर्ग भेड़िया बोला, "बेचारा पूरा टेढ़ा-मेढ़ा हो रखा है, बेहोश तो होना ही था।"

एक भेड़िये ने अनुमान जताया, "लगता है दीमक की बाँबी में घुसकर बाहर निकला होगा। ऐसा टेढ़ा तो तभी हो सकता है।"

एक जवान भेड़िये ने उसके पाँव देखकर कहा, "लगता है खूब सारा पैदल चला है। देखो ज़रा, चारों पाँव के पंजे सूजकर चन्द्रमा जैसे हो गए हैं।"

बुज़ुर्ग भेड़िये ने इस पर हामी भरी। "हाँ, ये तो है। इसके साथ जो भी हुआ हो। अब हमारी भेड़ियाई इसी में है कि हम इसको सीधा कर दें। हो सकता है सीधा करने से इसको होश आ जाए।" ये सुझाव सबको पसन्द आया। सब भेड़ियों ने मिलकर टेढ़े

जानवर को चारों तरफ से पकड़ा और खींचने लगे। भेड़िये ज़ोर लगाते-लगाते थक गए, पर ऊँट टेढ़ा ही रहा।

अब क्या करें? कोई तरीका तो ज़रूर होगा जिससे इसे सीधा किया जा सके! भेड़िये उसे सीधा करने का उपाय सोचने लगे। उन्होंने शिकार करने जाना भी बन्द कर दिया। तीसरे दिन भेड़िये के एक बच्चे के दिमाग की बत्ती जली। उसने कहा, "इस टेढ़े जानवर को नदी में डाल देते हैं। जब यह गलकर नरम हो जाएगा, तब सीधा करना आसान होगा।"

यही तय पाया गया। पर कितने दिन पानी में रखें इस पर भेड़िये एकमत नहीं थे!

एक बोला, "एक पूरी रात पानी में रखना चाहिए, क्योंकि इतने समय में चन्द्रमा गलकर सूरज बन जाता है।"

दूसरा बोला, "पूरे चार महीने पानी में रखना होगा, क्योंकि मौसम बदलने में भी इतना समय लगता है।"

कोई बोला, "इतना बड़ा जानवर है। जब तक नदी का पूरा पानी ना सोख ले, तब तक पानी में रखना चाहिए। तभी तो गलेगा।"

एक भेड़िये ने कहा, "11 दिन में गलकर नरम हो जायेगा। क्योंकि नौ और दो मिलकर ग्यारह होते हैं।"

ये बात सब भेड़ियों को ठीक लगी। एक बार फिर सारे भेड़िये जुटे और आलकी की पालकी, जय कन्हैयालाल की करते हुए ऊँट को नदी में डाल आए।

भेड़ियों का मानना था कि 11 दिन पानी में रहकर वह नरम हो जाएगा। इसके बाद सब मिलकर उसको सीधा कर देंगे।

12वें दिन सब मिलकर नदी किनारे पहुँचे। उन्होंने पाया कि टेढ़ा जानवर तो क्या उसकी पूँछ तक वहाँ नहीं है। भेड़ियों ने इस पर बहुत सोचा कि इतना बड़ा जानवर आखिर गया कहाँ? वे सोचते रहे और तरह-तरह की अटकलें लगाते रहे।

अन्त में वे इस नतीजे पर पहुँचे कि उसे दो-तीन दिन से ज़्यादा पानी में नहीं रखना था। 11 दिन बहुत होते हैं। इतने में तो वह गलकर बह गया होगा!

रोहन चक्रवर्ती

कोरोना से हुए जंगली जानवर खुश

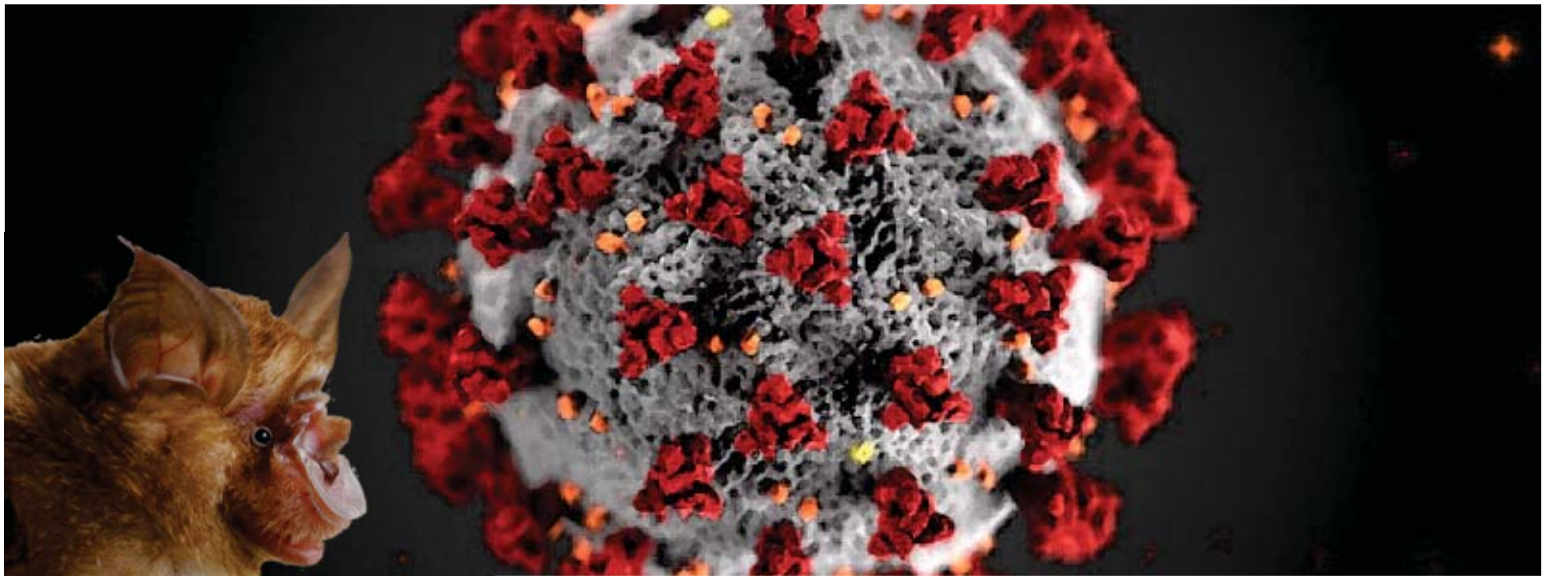

नया कोरोना वायरस कहाँ से आया?

तुम जानते ही होगे कि चीन सहित बाकी दुनिया में एक नया कोरोना वायरस तेज़ी-से फैल रहा है। इससे बचने के लिए टीका और दवाइयों की खोज के साथ-साथ वैज्ञानिक इस नए वायरस के स्रोत का भी पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। एक हालिया अध्ययन के अनुसार इस वायरस के स्रोत के बारे में कुछ सुराग प्राप्त हुए हैं। इनसे पता चला है कि इसने हाल ही में मानव शरीर में प्रवेश किया है।

वैसे तो इन्सानों में कई किस्म के कोरोना वायरस पाए गए हैं। लेकिन 2019 में चीन में इन्सानों में एक नया कोरोना वायरस उभरा है। और इस कारण से इसे COVID-19 (कोविड या कोरोना वायरस डिज़ीज़ - 19) कहा जा रहा है। हाल ही में उभरने के बावजूद यह वायरस जनवरी से 25 मार्च तक चार लाख से भी अधिक लोगों को संक्रमित कर चुका है।

कोविड-19 एक इन्सान से दूसरे इन्सान तक कैसे फैलता है, इसका अभी हमें पक्का पता नहीं। चीन में उभरी यह बीमारी अभी तक 100 देशों में फैल चुकी है। एक लाख से भी ज़्यादा लोग ठीक हो चुके हैं। जबकि लगभग 18 हज़ार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। विदेश से लौटने वाले लोग और पर्यटक अपने साथ भारत में भी कोविड-19 ले आए हैं।

इसका शुरुआती मामला चीन के वुहान शहर स्थित हुआनन सीफूड बाज़ार के सम्पर्क में रहे लोगों में देखा गया। इस सीफूड बाज़ार में कई तरह के जंगली जीव बेचे जाते हैं। वायरस के मूल स्रोत के बारे में जानने के लिए शोधकर्ताओं ने मनुष्यों में अभी फैलने वाले इस वायरस की तुलना जीनोम संग्रहालय में उपलब्ध कोरोना वायरस से की। कोरोना वायरस की जो दो किस्म सबसे नज़दीक पाई गईं, वे चमगादड़ से उत्पन्न हुई थीं।

एक अध्ययन में कोरोना वायरस का सम्भावित स्रोत हुआनन बाज़ार में बिकने वाले साँपों को बताया गया था। लेकिन कई वैज्ञानिकों ने कहा है कि साँपों में कोरोना वायरस के संक्रमण होने का कोई प्रमाण नहीं है।

इनके आधार पर शोधकर्ता चमगादड़ को इसकी उत्पत्ति का सम्भावित स्रोत कह रहे हैं। चूँकि हुआनन सीफूड बाज़ार में चमगादड़ नहीं बेचे जाते, इससे लगता है कि इस वायरस के चमगादड़ से मनुष्य में पहुँचने की कड़ी में एक और मध्यस्थ जीव होगा। कुल मिलाकर यह बात तो साफ है कि वन्य जीवों में वायरस का एक छिपा भण्डार है जो इन्सानों में फैलने की क्षमता रखता है।

स्रोत फीचर्स से साभार

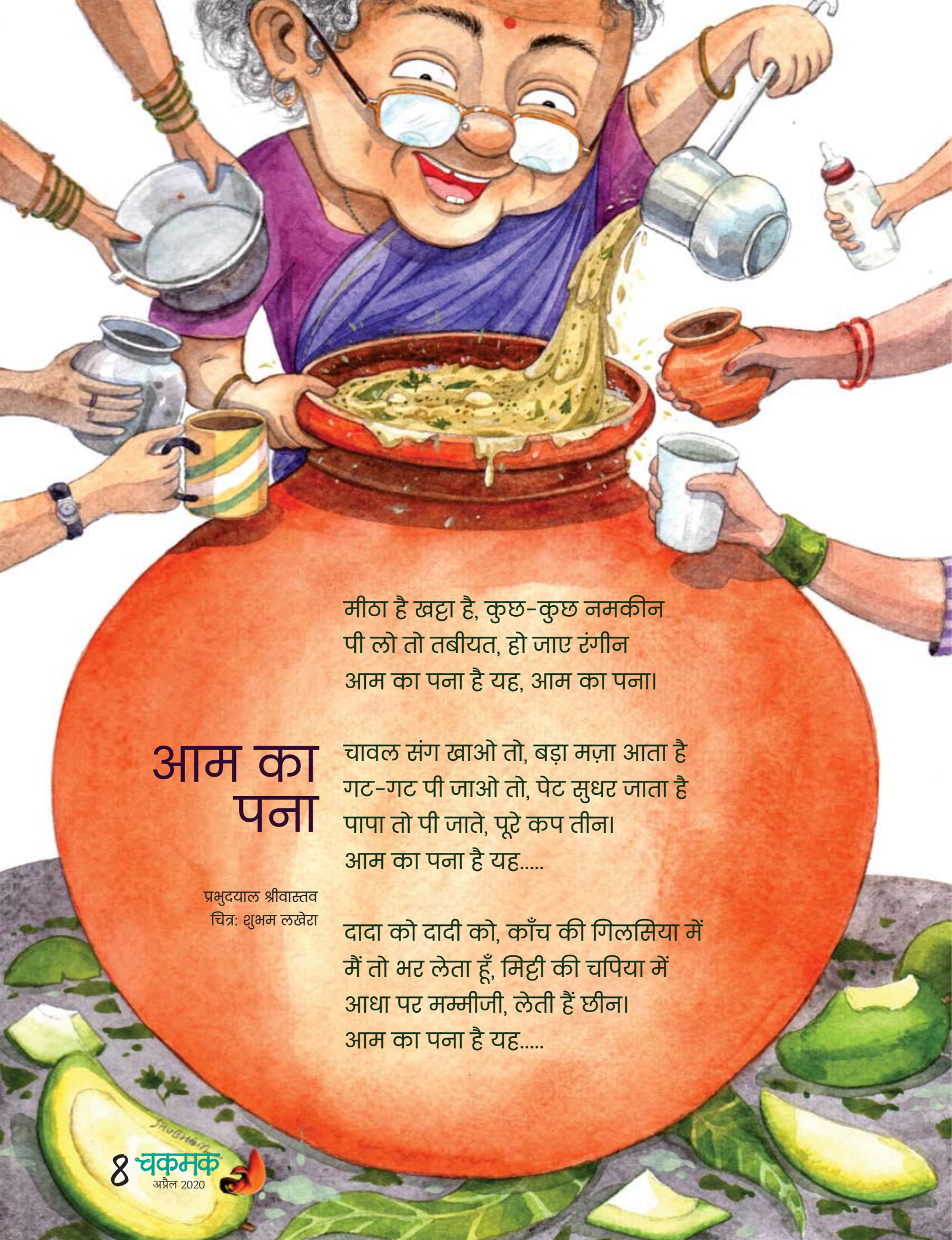

आम का पना

प्रभुदयाल श्रीवास्तव
चित्र: शुभम लखेरा

मीठा है खट्टा है, कुछ-कुछ नमकीन
पी लो तो तबीयत, हो जाए रंगीन
आम का पना है यह, आम का पना।

चावल संग खाओ तो, बड़ा मज़ा आता है
गट-गट पी जाओ तो, पेट सुधर जाता है
पापा तो पी जाते, पूरे कप तीन।
आम का पना है यह.....

दादा को दादी को, काँच की गिलसिया में
मैं तो भर लेता हूँ, मिट्टी की चपिया में
आधा पर मम्मीजी, लेती हैं छीन।
आम का पना है यह.....

नेमप्लेट

मुकेश मालवीय

किसी घर में कौन रहता या रहती है यह उस घर के बाहर लगी नेमप्लेट बिना पूछे हमें बता देती है। अमूमन नेमप्लेट शहर के मकानों पर लगी दिखती हैं। गाँव में तो हरेक दूसरे घर को पहचानता है। यदि बाहर का कोई व्यक्ति यहाँ आकर किसी घर का पता पूछे तो उसे उस घर तक छोड़कर आने वाले गाँव में कम नहीं होते। पर मैं एक ऐसी नेमप्लेट को जानता हूँ जो एक गाँव में है। और यह अपने आप में ही एक पता है।

यह गाँव है पहवाड़ी। लगभग सौ एक घर की बस्ती है। यहाँ एक ऐसा घर है जिसमें सिर्फ एक नेमप्लेट रहती है। यह नेमप्लेट घर की इस दीवार पर पिछले 60 सालों से रह रही है। आज से सौ एक साल पहले इस गाँव का एक व्यक्ति बम्बई चला गया था। उसका नाम क्या था यह तो आजकल के नए लोगों को नहीं पता। पर ये लोग बम्बई वाले बाबूजी को तो जानते हैं। इस टूटे हुए बड़े घर को बाबूजी के घर के रूप में जानने वाले ज़्यादातर लोग अधिक उम्र के ही हैं।

एक-दो बूढ़े लोग हैं जो उन्हें हरभजन बाबू के नाम से जानते हैं। कुछ एक साल बम्बई में नौकरी करके जब वे गाँव लौटे तो सबसे पहले उन्होंने अपने घर को एक बड़ा मकान बनाने के बारे में सोचा। यह शायद 1940 की बात है। उस समय गाँव में सभी के घर कच्ची मिट्टी के थे। बाबूजी ने अपना बड़ा मकान ईंट, सीमेंट और कीमती लकड़ियों से बनवाया। मकान के पास एक कुआँ बनवाया और विलायती बेर का एक पेड़ भी लगाया। इन गाँववालों के पास बाबूजी के इस बड़े मकान के साथ-साथ कुएँ और बड़ी बेर के भी कई किस्से हैं। बाबूजी इस मकान के दालान में एक बैंच पर बैठकर बम्बई के किस्से सुनाया करते। लेकिन बाबूजी ज़्यादा दिन इस मकान में रह नहीं सके और ईश्वर के बड़े मकान में चले गए।

उनके एक बेटे बाहर किसी नौकरी में थे। तब वे इस मकान में रहने आ गए। यह 1950 के आसपास की बात होगी। अब इतने बड़े मकान में उनके करने को और कुछ तो था नहीं तो उन्होंने इसके बाहर की एक दीवार पर एक प्लेट लगवाई, जिस पर लिखा था – शे.सिं. वर्मा. पहावाड़ी। यह गाँव में लिखी हुई एकमात्र इबारत थी। स्कूल जाने वाले कुछ बच्चों ने इस प्लेट को देखकर ही गाँव का नाम लिखना सीखा। इसे नेमप्लेट कहते हैं और इस पर शेर सिंह वर्मा पहावाड़ी लिखा है यह बात उन्होंने गाँव में कई लोगों को बताई थी।

शेर सिंह वर्मा के पास कोई किस्से नहीं थे। वे शान्त व अकेले रहते और पुराने उपन्यास व सत्यकथाएँ पढ़ते। फिर कुछ दिनों बाद यह मकान रीता हो गया और बहुत दिनों तक कोई इसमें नहीं रहने आया। तब कुछ कबूतर, चमगादड़, गिलहरी, साँप आदि इसमें रहने लगे। इन्होंने इस मकान को अपने हिसाब से री-डिज़ाइन कर लिया। पर यह नेमप्लेट इस मकान में अब भी रहती है। इसने अपनी दीवाल को अभी भी सहारा दिया हुआ है।

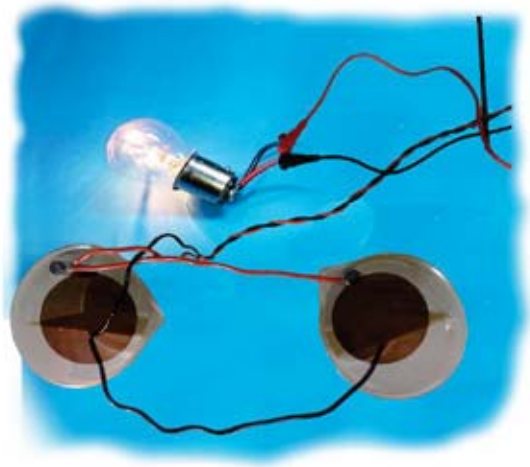

गाय की पेशाब से बिजली

के आर शर्मा

विज्ञान की कक्षा थी। हम बिजली पर कुछ-कुछ काम कर रहे थे।

आजकल सामान्य बल्ब की जगह एलईडी का इस्तेमाल होता है। तो हमने एक सैल को एलईडी से जोड़ा। फक्क-से एलईडी रोशन हो गया। फिर दो सैल और एक एलईडी को जोड़ा। इसके बाद दो सैलों के साथ दो एलईडी को जोड़ा। फिर आलू, टमाटर, खीरा, चीकू के सैल बनाए। तांबे और जस्ते की चिप्पियों को पिलपिले किए टमाटर, आलू, चीकू में घुसाया। दोनों चिप्पियों से तारों को जोड़कर एलईडी को जोड़ा तो एलईडी रोशन हो गया। फिर एक बज़र को जोड़ा तो बज़र भी आवाज़ करने लगा।

तभी किसी ने कहा कि गाय के मूत्र से बिजली बनती है। गाय एक पवित्र पशु है। उसकी पूजा होती है। गाय हमारी माता है। इसलिए गाय के मूत्र से बिजली बनती है। गाय का मूत्र औषधि है। पूजा-पाठ में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। यह कहते हुए उनके माथे पर गाय के प्रति पवित्र भाव उभर रहे थे।

यह सुनकर एक दूसरे व्यक्ति ने कहा कि क्या गाय के अलावा किसी और जीव के पेशाब से भी बिजली बनाई जा सकती है? फिर क्या था, विचारों का तांता लग गया। क्या मनुष्य के पेशाब से बिजली पैदा हो सकती है? अगर गाय के पेशाब से बिजली बन सकती है तो मनुष्य, बकरी, भैंस, बैल, बिल्ली के पेशाब से भी बननी चाहिए।

"करके देखना होगा। विज्ञान की यही तासीर है - करके देखना। चलो, इस विचार को आज़माया जाए।" मैंने कहा।

पेशाब लाने के लिए देर तक गाय के आसपास खड़े रहकर इन्तज़ार करना पड़ा। आखिरकार गाय ने पेशाब की। प्लास्टिक की एक बोतल में पेशाब एकत्र किया गया। बोतल का मुँह संकरा था। इसलिए इकट्ठा करते समय पेशाब बोतल के बाहर छलक रहा था। हाथ पेशाब में सने जा रहे थे। पर चूँकि गाय पवित्र है, इसलिए झिझक नहीं थी।

अब बारी थी मनुष्य के पेशाब की। मनुष्य तो थे, मगर पेशाब कौन लाएगा यह विचार हवा में तैर रहा था। संकोच किसी दीवार की तरह बाधक बना हुआ था। आखिर एक व्यक्ति ने संकोच की दीवार लाँघी। वे बोतल लेकर शौचालय गए और अपना पेशाब ले आए। कुछ लोग नाक-मुँह पर रुमाल लगाए हुए थे। आखिर मनुष्य का पेशाब तो गन्दा होता है। पर प्रयोग करने के लिए तो इस गन्दगी में भी हाथ डालना ही होगा!

अब हमारे पास गाय और मनुष्य दोनों का पेशाब मौजूद था। दोनों में पीलापन दिखाई दे रहा था। हमने प्लास्टिक के दो गिलास लिए, वही जिनमें शादी-ब्याह में पानी परोसा जाता है। दो अलग-अलग गिलासों में गाय और मनुष्य का पेशाब लिया। दोनों गिलास पेशाब से आधे से अधिक भरे थे। हरेक गिलास में तांबे और जस्ते की चिप्पियों को दो तारों से अलग-अलग जोड़ा। फिर एक एलईडी को दो तारों के बीच जोड़ा। कुछ ही देर में एलईडी जलने लगा। अगली बार एलईडी की जगह बज़र को जोड़ा तो बज़र से आवाज़ आने लगी।

इस तरह हमने देखा कि गाय और मनुष्य दोनों के ही पेशाब से बिजली पैदा हुई। यह वैज्ञानिक चेतना का एक ठोस उदाहरण है। इस प्रयोग से यह समझ में आया कि पेशाब चाहे गाय का हो या मनुष्य का दोनों में कुछ बुनियादी चीज़ एक जैसी ही है।

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था कि
तुमने कई फिल्में देखी होंगी। ऐसी कौन-सी फिल्म है जिसका अन्त तुम्हें बिलकुल अच्छा नहीं लगा, और क्यों?

कई सारे बच्चों ने हमें अपने जवाब लिख भेजे। इनमें से कुछ जवाब तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

मई अंक के लिए सवाल है -
इस दुनिया को किसने बनाया, और क्यों?

अपने जवाब हमें ज़रूर लिख भेजना। हमारा ईमेल है - chakmak@eklavya.in या फिर 9753011077 पर अपने जवाब हमें व्हॉट्सप्प भी कर सकते हो। कोशिश करना कि तुम्हारे जवाब हमें 15 अप्रैल तक मिल जाएँ।

पीके फिल्म ने एक अजीब-से टिंगे-टिंगे, नंगे-पुंगे दोस्त से मुलाकात कराई। बहुत ही धाँसू फिल्म लगी मुझे ये। कभी हँसते-हँसते पेट फूल जाता तो कभी रौंगटे भी खड़े हो जाते इस फिल्म को देखकर। पर मुझे इसका अन्त अच्छा नहीं लगा क्योंकि पीके अपने गोले पर वापस चला जाता है। और लौटता भी है तो अकेले नहीं। अगर अकेले लौटता तो अनोखा रहता इस दुनिया में। मेरा तो यह कहना है कि उसे जाना ही नहीं चाहिए था। काश पीके हमेशा रहता हमारे गोले पर और बजाते रहता सबकी। हँसाते रहता हमको। शायद डायरेक्टर ने पीके का सीक्वल बनाने की सोचा हो।

निशा गुप्ता, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

फिल्म *एसीपी शिवा* में हीरो पुलिस बना है। एक गूंगी लड़की है, जिसे वो अपनी बहन मानता है। और हीरो को उससे बहुत लगाव है। वो लड़की खुशी से रह रही थी। एक बार वो जंगल से गुज़र रही थी। वहाँ दो-चार लोग बैठे हुए थे। दूसरी तरफ से एक लड़की अपनी दोस्त को घर छोड़कर वापस आ रही थी। जहाँ वे लोग बैठे थे, वहीं उसकी स्कूटर बन्द पड़ गई। वे लोग उसके साथ छेड़खानी करने लगे। इस गूंगी लड़की ने ये होते हुए देखा तो वो तुरन्त उस लड़की की मदद करने दौड़ी और उसे छुड़ाने की कोशिश करने लगी। उन गुण्डों ने उसे खूब पीटा, पर वो पीछे नहीं हटी। उसने उस दूसरी लड़की को वहाँ से भाग जाने के लिए इशारा किया। वो बोल नहीं पाती थी। फिर भी उसने उस लड़की की जान बचाई। उस गूंगी लड़की को गुण्डों ने मार डाला। उसने दूसरी लड़की की जान बचाई और उसके लिए अपनी जान गँवाई। ऐसा नहीं होना चाहिए था। बस इतना ही, वरना तो यह फिल्म मुझे बहुत ही अच्छी लगी थी।

सोनाली शंकर दिवे, आठवीं, शासकीय माध्यमिक आश्रम शाला, पिंपलगाँव, महाराष्ट्र

मैंने एक फिल्म देखी थी। उसका नाम था *सैराट*। फिल्म की शुरुआत तो अच्छी थी, पर अन्त मुझे पसन्द नहीं आया। क्योंकि हीरो-हीरोइन दोनों कहीं दूर जाकर रह रहे थे, तो इन्हें (लड़की के परिवारवालों को) क्या ज़रूरत थी वहाँ जाकर उन्हें मार डालने की? और मार भी डाला, तो कम से कम उनके नन्हे बच्चे को तो साथ ले जाते अपने।

अर्चना सोमा शिद, आठवीं, शासकीय माध्यमिक आश्रम शाला, खेड़, महाराष्ट्र

डर एक ऐसी मूवी है जिसका अन्त हमें बिलकुल अच्छा नहीं लगा। इस फिल्म में भूमिका निभाने वाले ज़्यादातर लोगों जैसे शाहरुख खान, सनी देओल और जूही चावला ने बहुत मेहनत की है। इस फिल्म में जूही चावला सनी देओल को बहुत लाइक करती थी और शाहरुख खान जूही चावला को। लेकिन अनजाने में वह शाहरुख खान को भी लाइक करती थी। लास्ट में जब सनी देओल को ये बात पता चलती है तो वह शाहरुख खान को मार डालता है। इसीलिए हमें फिल्म का अन्त अच्छा नहीं लगा। और आगे से हम चाहते हैं कि जिस फिल्म में दो हीरो हों, उस फिल्म में दो हीरोइन भी रखनी चाहिए।

फरीद आलम, स्वतंत्र तालीम – सेंटर रामदुआरी, उत्तर प्रदेश

उबुंटू फिल्म में एक स्कूल था। वहाँ बच्चे काफी कम थे। और उस गाँव का नाम था ढोबलेवाडी। उस गाँव के सरपंच का कहना था कि वो स्कूल बन्द होना चाहिए। पर उस स्कूल में जो सर सिखाते थे, वे सरपंच को रोक रहे थे। पर फिर उन सर की बीवी बीमार हो गईं। इसलिए वे वहाँ से चले गए। और सरपंच ने वो स्कूल बन्द कर दिया। इसलिए मुझे ये फिल्म पसन्द नहीं आई।

सागर रामदास गभाले, आठवीं, शासकीय माध्यमिक आश्रम शाला, खेड़, महाराष्ट्र

हमने बहुत सारी फिल्में देखी हैं - *दीवानापन*, *मुकद्दर*, *कच्चा धागा*, *देहातीबतार*, *दिलवाला*। इनमें हमें *मुकद्दर* फिल्म अच्छी नहीं लगी। क्योंकि इसमें काजल रघवानी दूसरे से शादी कर लेती है और खोसारी लाल ज़हर खाकर मर जाता है। खोसारी लाल अपनी माँ का इकलौता बेटा था और उसकी माँ बहुत रोती है।

सुमित, पाँचवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे *ड्रीमगर्ल* मूवी का एण्ड अच्छा नहीं लगा क्योंकि उसमें पता चल जाता है कि पूजा एक लड़की है।

दिनेश, ग्यारह वर्ष, मंज़िल संस्था, दिल्ली

मुझे *कंचना रिटर्न* का अन्त बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा। क्योंकि *कंचना रिटर्न* में शिवा रहीम को अपने अन्दर बुलाकर सब लोगों को मार देता है। और रहीम को खूनी शिवा कहता है 'मसक कली मसक कली, तू तो गया' और फिर रहीम उसे मार देता है।

मनीष रावत, पाँचवीं, एसडीएमसी स्कूल, हॉज़ खास, दिल्ली

मुझे फिल्म देखना बहुत पसन्द है। मुझे *धूम-3* का अन्त बिलकुल अच्छा नहीं लगा। क्योंकि किसी इन्सान के पीछे, चाहे वह कितना ही खास क्यों न हो, अपनी जान न्यौछावर करने से कुछ नहीं मिलता। बल्कि उसे ज़िन्दगी भर अपनी बेवकूफी के कारण याद रखा जाता है। हमें खुद को सबसे ऊपर रखना चाहिए। हमें खुद पर आत्मविश्वास होना चाहिए।

दर्क्षा पटेल, बारहवीं, ब्राइट स्टार स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

रईस फिल्म की आखिरी रील मुझे अच्छी नहीं लगी। क्योंकि उसमें आखिर में उस हीरो को उसके परिवार वालों से अलग ले जाकर गोली मार देते हैं। उसमें हीरो को मरना नहीं चाहिए था। पूरी फिल्म का मज़ा खराब हो गया। फिल्म को और आगे बढ़ाना चाहिए।

भूमिका, आठवीं, मंज़िल संस्था, दिल्ली

मैंने एक फिल्म देखी है जिसका नाम है *मर जावां*। इस फिल्म के अन्त में हीरो अपनी हीरोइन को मार देता है और खुद भी मर जाता है। मुझे इसका अन्त बिलकुल अच्छा नहीं लगा। क्योंकि इसमें दोनों ही मर जाते हैं, जबकि वो दोनों पूरी ज़िन्दगी एक साथ बिताना चाहते थे। और हीरो हीरोइन के लिए जेल भी गया था।

विशम्भर ढाली, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

मुझे *गोलमाल* फिल्म का अन्त अच्छा नहीं लगता है। क्योंकि उसमें कुछ लोग चिड़ियाघर में जो बहुत सारे जानवर थे, उन्हें मारना चाहते थे। और चिड़ियाघर को तोड़ना चाहते थे। क्योंकि वह एक बड़ी-सी बिल्डिंग बनाना चाहते थे।

सुरेन्दर, पाँचवीं, एसडीएमसी स्कूल, हॉज़ खास, दिल्ली

किट्टू उड़नछू!

मिल गया किट्टू

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा:

किट्टू अपने 14 लोगों के परिवार के साथ सैर के लिए पन्ना जाता है। लौटते समय वह एक ढाबे पर छूट जाता है, जहाँ उसकी मुलाकात माधव नाम के आइसक्रीम वाले से होती है। जब किट्टू उसे बताता है कि वह खो गया है तो माधव उसे पुलिस स्टेशन ले जाने लगता है। तब किट्टू माधव को अपने पिता के डॉन होने की ऐसी कहानी बताता है कि डर के मारे माधव उसे अपने घर ले आता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर किट्टू को मज़ा आ रहा होता है। शुरू में माधव की बेटी मधेश्वरी यानी 'मैड' को किट्टू का आना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। लेकिन फिर दोनों दोस्त बन जाते हैं। खजुराहो पहुँचकर किट्टू का परिवार उसे ढूँढने वापिस निकलता है। माधव भी किट्टू के माता-पिता से सम्पर्क करने की कोशिश करता है, लेकिन कर नहीं पाता है। इधर किट्टू का परिवार उसे ढूँढने की जद्दोजहद में पुलिस स्टेशन आ पहुँचता है और उधर किट्टू खड़े होकर स्केटबोर्डिंग करने की कोशिश में जुट जाता है।

अब आगे...

"तुम छुट्टियाँ बीतने तक तो यहीं रहोगे न?"

स्केटिंग आंटी के ये शब्द किट्टू के दिमाग में गूँजते रहे। उसे अपने परिवार से अलग हुए एक दिन से ज़्यादा समय हो गया था। स्केटबोर्ड को लेकर अपने उत्साह के चक्कर में उसे एहसास ही नहीं हुआ था कि उसे माँ और इती फुई की कितनी कमी महसूस हो रही थी। शायद माधव को गलत नम्बर देना अच्छा आइडिया नहीं था। अगर उसका परिवार उसे कभी ढूँढ ही नहीं पाया तो? और अगर वो उसे कभी ढूँढना ही न चाहते हों तो?

मैड ने गौर किया कि किट्टू अचानक से चुप-सा हो गया था। लेकिन वो अम्मा को ये बताने में व्यस्त थी कि किट्टू ने स्केट पार्क में क्या कमाल किया था।

यहाँ तक कि मंगलेश्वरी ने जब ये सवाल दागे – "उसे चोट तो नहीं लगी? किसने कहा था उसे स्केटबोर्ड पर चढ़ने को? तुम जानती भी हो वो कौन है, बेवकूफ लड़की?" – तब भी किट्टू दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार के बारे में ही सोचता रहा। हालाँकि वो अपने परिवारवालों को कोई प्यार-व्यार नहीं करता था, लेकिन उनके साथ होने पर उसे एक सुकून का एहसास ज़रूर होता था। उसका परिवार मानो उस पुरानी चादर के जैसा था जिसे ओढ़े बिना आपको रात को नींद नहीं आती। वो चादर कितनी भी पुरानी हो जाए, फट-फुटा जाए, तो भी हमसे छूटती नहीं है। मूर्खता लगती है, पर ये हकीकत है।

मैड किट्टू के पास आकर बोली, "तुम किसी डॉन के बेटे हो?"

"श्श्श्श..." मंगलेश्वरी अभी भी अपनी बेटी को चुप कराने की फिज़ूल कोशिश कर रही थी।

"मुझे उन लोगों की याद आ रही है," अपने खयालों में खोए हुए किट्टू ने कहा।

"अरे, पर तुम डॉन के बेटे हो या नहीं?"

"हाँ, मैं उनका बेटा हूँ। मैं किसी का बेटा तो होऊँगा ना? बेवकूफी भरी बातें मत करो मैड।"

"तो क्या वो लोग हमें मार देंगे?"

"हाँ, वो मार सकते हैं। मेरे परिवार के लोग काफी पागल हैं। एक सैकण्ड, क्यायायाया??? ये क्या बोल रही हो? हमें कौन मार देगा?" मैड क्या पूछ रही थी इसका एहसास किट्टू को अब हुआ और वो मैड की तरफ चकित होकर देखने लगा।

"तुम्हें नहीं। सिर्फ हमें मारेंगे। तुम तो किसी डॉन के परिवार से हो ना? वो लोग तो यही सोचेंगे कि हमने तुम्हें किडनैप किया है और फिर वो हम सबको मार देंगे।"

"घर्र-घर्र-घर्र!" किट्टू हँस-हँसकर लोटपोट हो रहा था और माँ-बेटी, दोनों डर के मारे जड़ होकर उसे देखे जा रही थीं।

दोपहर तक माधव ने कुछ कुल्फियाँ बेच दी थीं। आज कल से ज़्यादा धन्धा हुआ था लेकिन अभी खुशी मनाने का समय नहीं था क्योंकि डॉन जूनियर घर पर उसका इन्तज़ार कर रहा था। अभी तक डॉन जूनियर के परिवार का कोई अता-पता नहीं था। माधव समझ नहीं पा रहा था कि ये अच्छी बात थी या बुरी। हमेशा की तरह परेशान माधव चाय पीने के लिए और सिर की मालिश के लिए रुक गया। रैन बसेरा ढाबा वहीं था, उसकी दाईं तरफ।

भैरो ने अपने दोस्त को चाय देते हुए अपने काम को लेकर शिकायत की। "यार माधव, खुद का काम होना सबसे अच्छा है। कोई मालिक नहीं, कोई झंझट नहीं। ऊटपटाँग ग्राहक भी नहीं।"

"पागल है क्या भैरो? नौकरी करना ज़्यादा अच्छा है। तुम्हें रोज़ ये तो नहीं सोचना पड़ता कि कम से कम इतना धन्धा हो जाए कि परिवार का पेट भर सकूँ। काश कि मैं इस चिन्ता से बरी हो पाता। और ऊटपटाँग ग्राहकों की बात तो तुम करो नहीं। कल तो हद ही हो गई।"

"अब तुमको क्या बताऊँ माधव? कल का दिन तो मेरे लिए भी बहुत खराब था। और रात? रात के बारे में तो पूछो ही मत।"

अवतार सिंह ने रंजीत चौधरी और पप्पा के साथ मिलकर पन्ना शहर में काफी छानबीन कर ली थी, लेकिन उनकी मेहनत बेकार गई थी। किट्टू की पासपोर्ट साइज़ की फोटो लेकर सभी अस्पतालों और छोटी पुलिस चौकियों से घूमकर अवतार सिंह लौटे ही थे, तभी रंजीत चौधरी को बेहद उत्साह में लग रहे भैरो का फोन आया।

जब ये तीनों थके-माँदे रैन बसेरा ढाबा पहुँचे तो वहाँ बहुत ही उत्सुक लोगों का एक समूह उनका इन्तज़ार कर रहा था। उनमें से एक माधव था, जो बिना रुके एक बिलकुल ही अविश्वसनीय कहानी सुनाए जा रहा था। अवतार सिंह ने जल्दी से कुछ जानकारियों को नोट किया, उस विशाल परिवार को अपनी सात सीटों वाली जीप में बैठाया और जनवार के लिए निकल पड़े।

रंजीत चौधरी और भैरो इस अनोखे पुनर्मिलन को देखने से वंचित नहीं रहना चाहते थे, इसलिए वो भी बाइक पर सवार होकर इनके पीछे हो लिए।

और इस पूरे झुण्ड का नेतृत्व कर रहा था माधव, जो अपनी साइकिल पर सबसे आगे चल रहा था।

ये वाकई बड़ा अजीब नज़ारा था।

"ये कुछ ज़्यादा ही हो रहा है, किट्टू," मैड ने चिल्लाकर कहा।

"चिल्लाओ नहीं। हँसी की डील याद है कि नहीं?"

"हाँ याद है। लेकिन जब तुम्हारी दोस्त और उसका परिवार मारे जाने वाले हों तो तुम्हें हँसी कैसे आ सकती है?"

"घर्र-घर्र-घर्र..."

"किट्टूटूटूटूटूटूटू!"

"अच्छा बाबा, अच्छा। मैं किसी डॉन का बेटा नहीं हूँ।"

"नहीं हो???"

"नहीं।"

"ले-लेकिन बाबा ने तो अम्मा को बताया था कि..."

"मैंने ही ये कहानी बनाई थी क्योंकि मैं पुलिस स्टेशन नहीं जाना चाहता था," किट्टू बोला ये जानते हुए कि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। "मैंने तुम्हारे बाबा को भी गलत नम्बर दिया था ताकि वो पप्पा को फोन न लगा पाएँ," उसने झेंपते हुए कहा।

इसके बाद माँ-बेटी, दोनों ने उसे तबीयत से सुनाई। मंगलेश्वरी ने तो ऐसे बड़बड़ाना शुरू कर दिया मानो पगला गई हो। किट्टू ने सोचा कि अगर वो मंगलेश्वरी का बेटा होता तो इस समय उसकी जमकर कुटाई होती।

मैड भी कहाँ पीछे रहने वाली थी। उसने इमली के पेड़ से टूटी एक लम्बी टहनी को हाथ में लिया और आगे के आँगन में किट्टू के पीछे लग गई।

जब दोनों दौड़ते-दौड़ते हाँफकर रुक गए, तो उन्हें कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। ऐसा लग रहा था कि बहुत सारी गाड़ियाँ उस घर की तरफ आ रही हैं।

"क्या यहाँ आने का इससे बेहतर रास्ता नहीं है? वो कहाँ होगा? क्या वो सच में यहाँ है? क्या यहाँ लोग रहते हैं? रंजीत तुम कम से कम मुझे तो अपनी उस कमबख्त बाइक पर ला सकते थे?"

"इती फुईईईईईईईई!"

बिलकुल, वो इती फुई की आवाज़ ही थी। रंजीत चौधरी गहरी नींद में भी उसकी आवाज़ सुन सकता था। इती फुई की आवाज़ बुलन्द थी और अभी तो उसकी आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे कोई विशाल मेंढक टर्रा रहा हो।

अगले 15 मिनट उथल-पुथल और अफरा तफरी से भरे रहे। माँ और इती फुई तेज़ी-से किट्टू की तरफ दौड़े, लेकिन ये दौड़ पप्पा ने जीती। उन्होंने अपने बेटे को कसकर अपनी बाँहों में भर लिया।

वो तो जब इती फुई ने पप्पा को कोहनी मारकर हटाया तब जाकर किट्टू साँस ले सका। अब किट्टू की बाईं ओर थीं इती फुई और दाईं ओर थीं माँ, और दोनों ही फफक रही थीं। जल्दी ही मोनी काकी, फोरम काकी, बटुक काका, अनीक काका, मन्नी दीदी, उसके 'असहनीय' भाई-बहन, जिनके बारे में किट्टू सोचता था कि वो रहे न रहे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता और चिन्मी सब उस पर झूम पड़े।

माधव, मंगलेश्वरी और मैड भी रोने लगे हालाँकि वो खुद नहीं जानते थे कि वो क्यों रो रहे थे।

बस वहाँ चिन्मी ही थी जो नहीं रो रही थी। बल्कि वो ये सोच रही थी कि सबको हो क्या गया है। वो "टिट्टू भाई आ गया" कहते हुए किट्टू के इर्द-गिर्द खुशी से नाच रही थी।

"चलिए माधवजी, हम सब रंजीत के ढाबे पर चलकर बढ़िया-सा खाना खाते हैं।" पप्पा बोले।

माधव तो अपनी किस्मत पर खुश हो रहा था कि जो व्यक्ति उसके सामने खड़ा था वो सोने से लदा हुआ, मूँछोंवाला बदमाश नहीं था। जैसे डॉन लोग होते हैं उस हिसाब से तो ये व्यक्ति काफी शरीफ लग रहा था। माधव की मजाल थी कि वो डॉन की बात को टाल सके? माधव के चेहरे के भाव देखकर मंगलेश्वरी, मैड और किट्टू एक-दूसरे की तरफ देखकर मन्द-मन्द मुस्करा रहे थे।

पूरा दल वापस रैन बसेरा ढाबे के लिए निकल पड़ा। रंजीत चौधरी इस बात से खुश था कि उसे कुछ और समय इती फुई के साथ रहने को मिलेगा। भैरो सोच रहा था कि इस पूरे 'गिरोह' को एक बार फिर खाना परोसना कितना भयानक होगा, और अब तो गिरोह में लोगों की संख्या भी बढ़ गई थी। वो यही उम्मीद कर रहा था कि वो लोग बस रात वहाँ न रुकें। अवतार सिंह खुश थे कि बच्चा अपने परिवार से मिल गया था। उन्हें अपने पोते-पोतियों और नाती-नातिनों को सुनाने के लिए एक बच्चे के गुम जाने और फिर मिल जाने की एक ज़बरदस्त कहानी मिल चुकी थी।

ढाबे में, मैड ने फटाफट सबको सुना दिया कि पिछले 36 घण्टों में किट्टू ने क्या कमाल की चीज़ की थी। "स्केटिंग आंटी ने मुझे बताया था कि दूसरे

देशों में भी ऐसे बहुत ही कम लोग हैं जो एक पैर पर स्केटबोर्डिंग कर पाते हैं। कुछ बैसाखियों का इस्तेमाल करते हैं, कुछ डॉक्टरों द्वारा बनाए गए खास तरह के पैरों का इस्तेमाल करते हैं। जब उन्होंने किट्टू को देखा था तब उन्हें भरोसा नहीं था कि वो ये कर पाएगा। इसमें बहुत प्रैक्टिस की ज़रूरत होती है। लेकिन किट्टू तो किसी पंछी की तरह निकला। आप गुंजन पक्षी के बारे में तो जानते होंगे न? किट्टू उतना तेज़ तो नहीं लेकिन उनके जैसा ही है।" चेहरे पर बड़ी-सी मुस्कान चिपकाए हुए मैड बोली।

किट्टू के चचेरे भाई-बहन उसे इस तरह देख रहे थे जिस तरह पहले कभी नहीं देखा था। पुन्नी उसे ऐसे देख रही थी मानो उससे नफरत नहीं करती हो। पिब्बू उसे डफोड़ नहीं बुला रहा था। और चिक्की तो मुस्कराते हुए ताली बजा रही थी। किसी को इस सबकी रिकॉर्डिंग करनी चाहिए थी। ये गिनीज़ बुक में दर्ज करने लायक पल था। पोटू भी दाँत दिखाते हुए मुस्करा रहा था, हालाँकि ये पक्का नहीं था कि वो किट्टू के मिल जाने पर खुश था या इसलिए कि अभी-अभी उसे पाँचवीं पूड़ी परोस दी गई थी।

किट्टू ने बिलकुल असम्भव लगने वाला काम कर दिखाया था। वो दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार की नज़रों में हीरो बन चुका था।

उसे लगभग हर एक व्यक्ति की ज़ोरदार पप्पियाँ, थपकियाँ और झप्पियाँ झेलनी पड़ रही थीं। इनमें माधव भी शामिल हो गया था क्योंकि उसका सोचना था कि डॉन के परिवार को खुश करने का कोई भी मौका हाथ से जाना नहीं चाहिए।

"बस करो अब!" किट्टू खीझकर चिल्ला उठा। "दो दिन आप लोगों से अलग होने पर भी जो नहीं हुआ, इस एक घण्टे में ज़रूर हो जाएगा। इन सारी पप्पियों-झप्पियों के बोझ तले मेरा दम निकल जाएगा!"

इसके बाद वहाँ कुछ समझदारी का माहौल बना। जल्दी ही सब लोग खाने और बतियाने में व्यस्त हो गए और किट्टू को फिर एक बार उसके हाल पर छोड़ दिया गया। माँ, इती फुई और मंगलेश्वरी की आपस में खूब जम रही थी।

किट्टू और मैड एक-दूसरे के पास बैठकर बातें कर रहे थे। वो किट्टू के लिए चुपचाप से अपना स्केटबोर्ड ले आई थी।

"इसे रखो," वो बोली।

"तुम्हारा स्केटबोर्ड मैड? नहीं, मैं नहीं रख सकता। फिर तुम क्या करोगी? और स्केटिंग आंटी को भी ये बात अच्छी नहीं लगेगी।" किट्टू बोला।

"मैं उन्हें बता दूँगी। तुम प्लीज़ इसे रख लो। मैं तुम्हें K वाला तो नहीं दे सकती। इस पर M लिखा है। देखो।" बोर्ड को उलटकर किट्टू को दिखाते हुए वो बोली। बोर्ड के बिलकुल आखिरी सिरे पर छोटा-सा M था जिसे खुद मैड ने खुरचकर बनाया था। "प्लीज़ मना मत करना," वो आगे बोली, "और कभी रुकना नहीं। कभी नहीं।"

दो हफ्तों बाद, एक दिन जब मैड स्कूल से वापस लौटी तो मंगलेश्वरी अपने सामने एक बहुत बड़ा पार्सल रखे बैठी थी और उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उस पार्सल का क्या करे।

"ये बम्बई से आया है," अपनी बेटी को देखते ही वो ज़ोर-से चिल्लाकर बोली।

मैड ने जल्दी से उस पार्सल को फाड़ा ताकि पता चल सके कि उसके भीतर क्या था। उसका दिल बहुत तेज़ी-से धड़क रहा था। पार्सल के भीतर एक चिट्ठी थी जो उसके दोस्त की तरफ से आई थी, और साथ ही एक चमचमाता हुआ नया स्केटबोर्ड भी था जिस पर मोटे काले रंग से M लिखा हुआ था। अपने आँसुओं को किसी तरह रोकते हुए मैड ने पढ़ना शुरू किया:

प्यारी मैड...

समाप्त चकमक

किट्टू उड़नछू!

कहानी: हर्षिका उदासी
चित्र: लावण्या नायडू
अँग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
प्रकाशक: एकलव्य
ISBN: 978-93-85236-85-3
मूल्य: ₹ 65.00
Published as *Kittu's Terrible Horrible Very Mad Day* in the English language by Duckbill Books.
www.pitarakart.in
www.eklavya.in

तुम चाहो तो दिए गए लिंक पर जाकर करके किताब आर्डर कर सकते हो
https://www.pitarakart.in/Kittu_udanchoo?search=Kittu

बहुत ज़ुकाम हुआ नन्दू को

रामनरेश त्रिपाठी

बहुत ज़ुकाम हुआ नन्दू को
बहुत ज़ुकाम हुआ नन्दू को
एक रोज़ वह इतना छींका
इतना छींका, इतना छींका
इतना छींका, इतना छींका
सब पत्ते गिर गए पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आँधी का।

चकमक

हाऊ हाऊ हप्प
बाल कविताओं का संग्रह
संचयन व सम्पादन: तेजी ग्रोवर
प्रकाशक: एकलव्य
ISBN: 978-93-85236-24-2
मूल्य: ₹ 130.00
www.pitarakart.in
www.eklavya.in

कौए और उनके करीबी रिश्तेदार रेवन मूर्ख नहीं होते। ये ना सिर्फ पहेलियाँ हल करना जानते हैं, बल्कि औज़ारों का इस्तेमाल करना भी जानते हैं। तुमने 'प्यासे कौए' की कहानी तो सुनी ही होगी। कहानी में एक कौआ पानी के घड़े में पत्थर डालता है ताकि पानी ऊपर आ जाए। और वो अपनी प्यास बुझा सके। हो सकता है कि यह एक सच्ची कहानी हो।

दुनिया भर में कौओं की 40 अलग-अलग किस्में पाई जाती हैं। जब इनमें से कुछ कौओं को प्रयोगशाला में लाया गया तो बहुत ही जल्दी उन्होंने नली के पानी में पत्थर डालना सीख लिया ताकि वो पानी में तैरते माँस के टुकड़ों तक पहुँच सकें।

कुछ कौए तो अपने खुद के औज़ार भी बनाते हैं। और अक्सर वो यह कला अपने माता-पिता से सीखते हैं।

कौए सामाजिक जीव होते हैं और समूहों में रहते हैं। ये सर्वाहारी होते हैं और सभी तरह की चीज़ें खाते हैं। जैसे कि कीट, इल्लियाँ, छोटे उभयचर जीव, साँप, चूहे, अण्डे, घोंसले बनाने वाले पक्षी, अनाज आदि। कभी-कभी यह कूड़े में से मरे हुए जानवर और बचा-खुचा खाना भी खोजते हैं।

जंगली कौआ

काँव काँव

nature conservation foundation
science for conservation

देसी कौआ

चिल्लाते कौए

कई लोगों को ऐसा लगा है कि शायद कौए इन्सानों के चेहरे पहचान सकते हैं। एक वैज्ञानिक ने इसे जाँचने का फैसला किया। उन्होंने व उनके कुछ विद्यार्थियों ने मास्क पहना और अपने विश्वविद्यालय के कैम्पस में सात कौओं को पकड़ लिया। फिर उनके पैरों में चूड़ियों जैसे छल्ले पहनाकर उन्हें छोड़ दिया। छल्ले इसलिए पहनाए ताकि वे बाद में उन कौओं को पहचान सकें।

उसके बाद, जब भी कोई व्यक्ति यह मास्क पहनकर कौओं के पास जाता तो छल्ले वाले ये कौए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए उसका पीछा करने लगते। किसी भी और तरह का मास्क पहनने पर कौए इस तरह का बर्ताव नहीं करते।

कुछ सालों में तो मास्क पहने व्यक्ति को देख चिल्लाने वाले कौओं की संख्या बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि अगर मास्क उलटा पहना हो या मास्क पहनकर टोपी लगाई हो तो भी कौए चिल्लाते।

इससे तुम्हें कौओं के सीखने के बारे में क्या पता चलता है?

फील्ड डायरी के लिए

कुछ मोहल्लों में कौए आम तौर पर दिख जाते हैं। जबकि कुछ लोगों को लगता है कि अब कौए उतनी आसानी से नहीं दिखते, जैसे पहले दिखते थे। इसका कारण है – घोंसला बनाने के लिए कम पेड़ों का होना और खाना ढूँढने के लिए कचरे के ढेरों का कम होना। चलो, कुछ कौओं को ढूँढने की कोशिश करते हैं।

सुबह या देर शाम को करीबन 15 मिनट के लिए अपने मोहल्ले में सैर पर निकलो। पेड़ों पर, बिजली के तारों और दीवारों पर देखो।

कौए अक्सर काफी शोर मचाते हैं। तो हो सकता है कि पहले तुम्हें इनकी आवाज़ सुनाई दे। यह तुम्हें किसी चील या शिकरा पर हमला करते हुए भी दिख सकते हैं। जब भी तुम्हें कौआ दिखाई दे या उसकी आवाज़ सुनाई दे तो डायरी में नोट कर लो।

- वह कौन-से रंग का है? क्या उसकी गर्दन, छाती और पेट ग्रे रंग के हैं? या वह पूरा चमकीला काला है?
- क्या वह अकेला है या उसके साथ और भी कौए हैं? क्या कौओं के साथ कोई और पक्षी भी हैं? उनके बारे में लिखो।
- कुछ मिनट तक ध्यान से कौओं को देखो। उनके व्यवहार व बोली के बारे में लिखो।
- क्या तुम कौए का घोंसला देख पाए?
- हमें बताओ कि कितनी बार तुम्हें देसी कौए और जंगली कौए का घोंसला दिखा।

प्रतियोगिता

हमें बताना कि अपने पड़ोस की सैर करते हुए तुमने कितने देसी कौए और जंगली कौए देखे। यदि तुम्हें एक भी कौआ ना दिखे तो अपने घर-पड़ोस के बड़े-बुज़ुर्गों से बात करो और पूछो कि क्या पहले वहाँ कौए दिखाई देते थे?

कौए अकसर काफी दिलचस्प व्यवहार करते नज़र आते हैं। यदि तुम्हें भी ऐसी कोई दिलचस्प चीज़ दिखे तो chakmak@eklavya.in पर हमें बताओ और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

चकमक

अनुवाद: कविता तिवारी

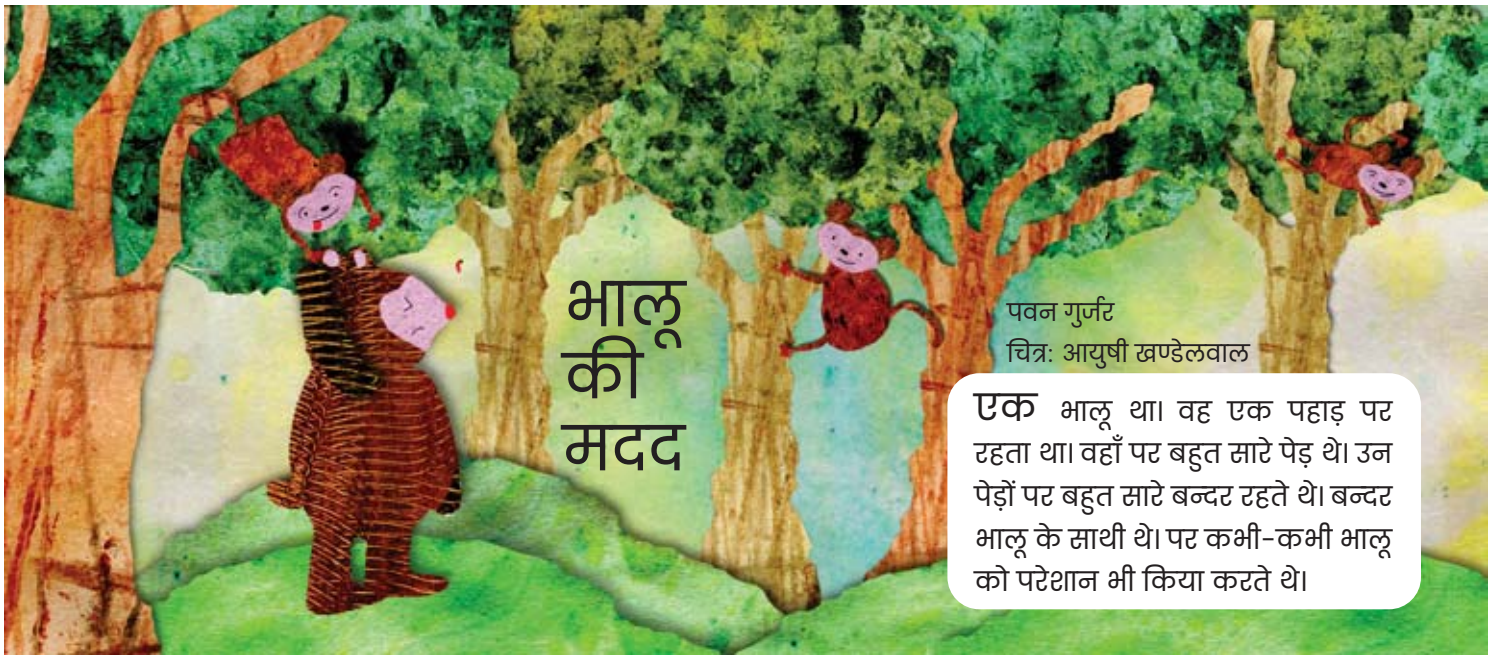

भालू की मदद
पवन गुर्जर
चित्र: आयुषी खण्डेलवाल
एक भालू था। वह एक पहाड़ पर रहता था। वहाँ पर बहुत सारे पेड़ थे। उन पेड़ों पर बहुत सारे बन्दर रहते थे। बन्दर भालू के साथी थे। पर कभी-कभी भालू को परेशान भी किया करते थे।

एक दिन भालू एक गाड़ी में आलू भरकर बेचने जा रहा था।
बन्दरों ने पूछा, “भालू, कहाँ जा रहे हो?” भालू ने कहा, “आलू बेचने।” इस पर बन्दरों को खूब हँसी आई।
बन्दरों ने कहा, “आलू जैसा तो तुम्हारा ही नाम है, भालू।”
बन्दरों ने फिर कहा, “आलू बेचने कहाँ जाओगे?” भालू ने कहा, “आलनपुर मण्डी जाऊँगा।”

भालू वहाँ से चल दिया। वह कुछ ही दूर गया था कि उसकी गाड़ी पिंचर (पंक्चर) हो गई।
भालू ने गाड़ी वाले से पूछा, “गाड़ी आगे क्यों नहीं चल रही है?” गाड़ी वाले ने कहा, “गाड़ी पिंचर हो गई है।”

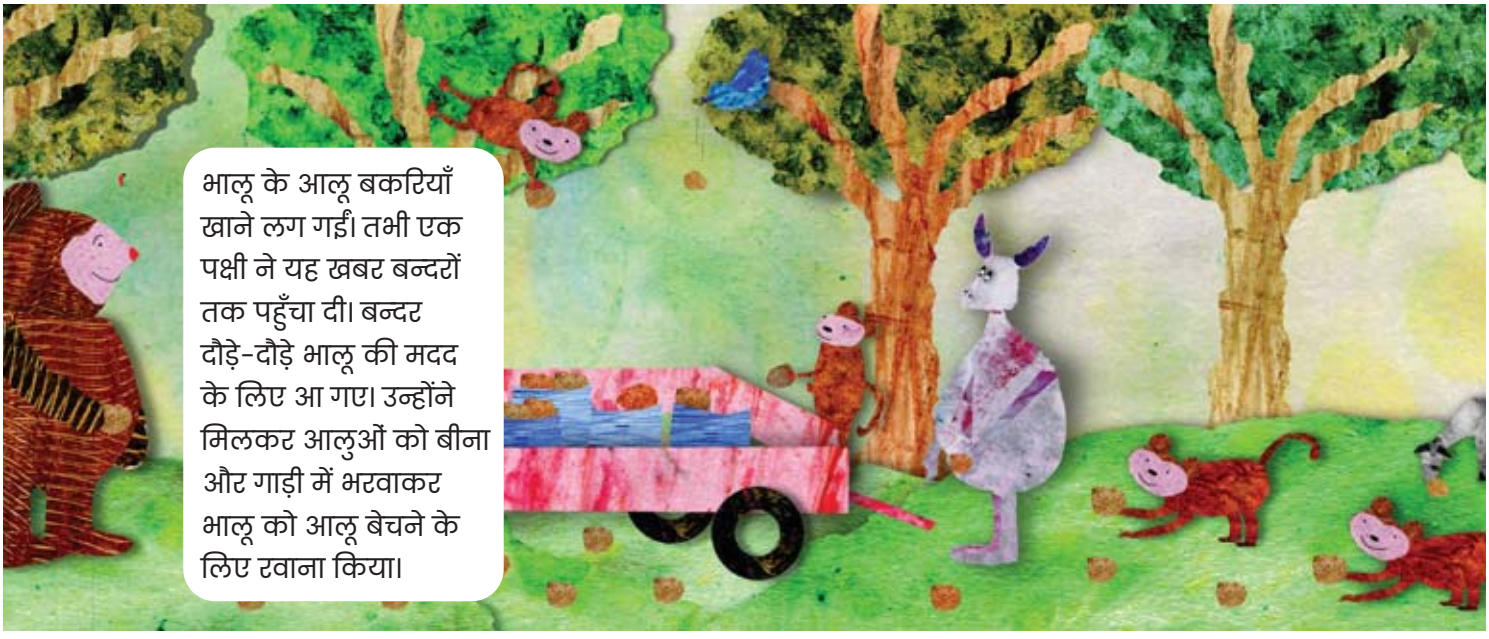

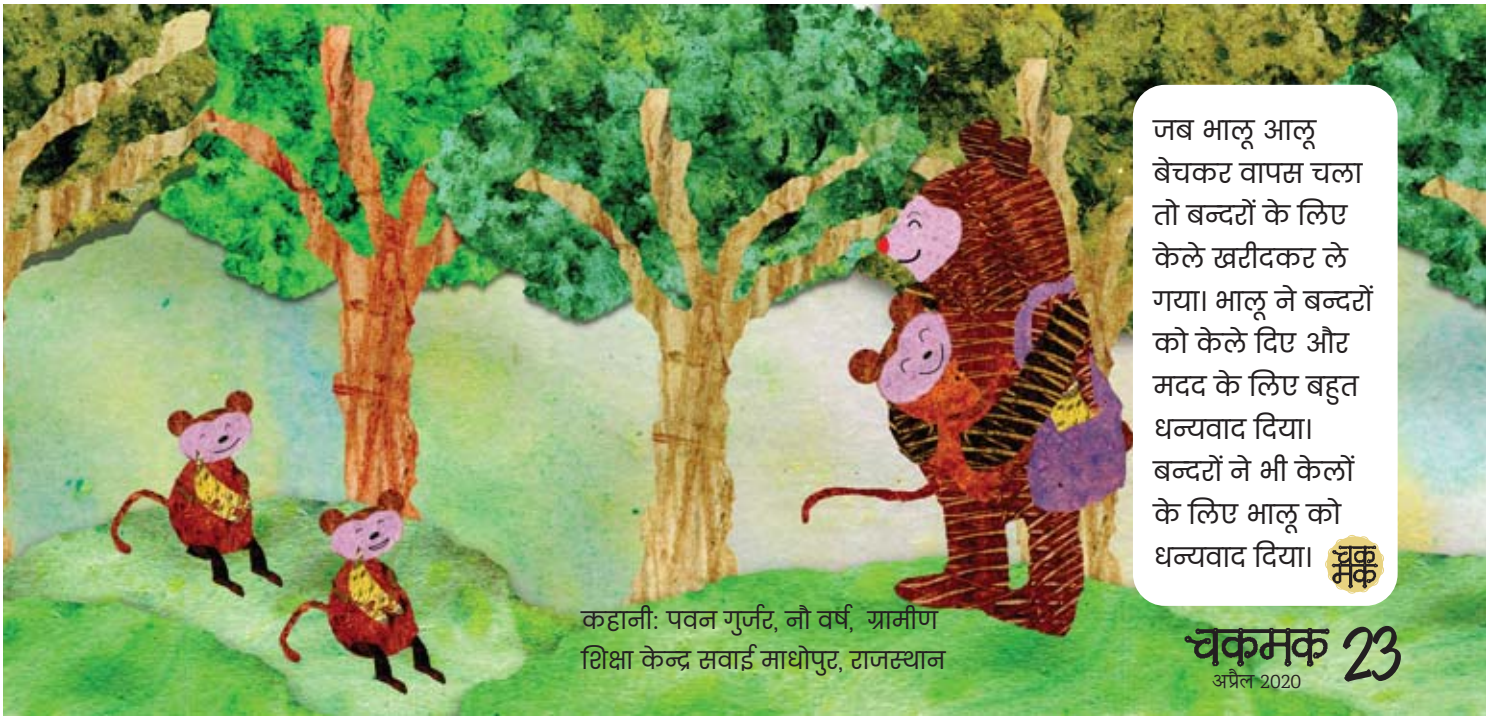

कहानी: पवन गुर्जर, नौ वर्ष, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र सवाई माधोपुर, राजस्थान

पक्की दोस्ती

मुदित श्रीवास्तव
चित्र: हबीब अली

आज बहुत सालों बाद अपने स्कूल जाना हुआ। उन दिनों स्कूल में घुसते ही लाइन से लगी साइकिलें दिखा करती थीं। आज साइकिलें कम थीं। मोटरसाइकिलें और स्कूटी ज़्यादा थीं। साइकिलों-मोटरसाइकिलों के बीच मैं वहाँ रुक गया जहाँ मेरी साइकिल लगा करती थी। उसके बगल में हर रोज़ एक और साइकिल लगा करती थी। स्कूल खतम होने के बाद मेरी साइकिल कहाँ गई, पता नहीं। पर मुझे पता है कि वो साइकिल कहाँ थी।

पाँचवीं के बाद हम चार-पाँच दोस्तों ने शहर के नए स्कूल में दाखिला लिया था। स्कूल हमारे लिए नया था, पर था बहुत पुराना। 1923 में बना था। अंग्रेज़ों के ज़माने का। बड़ी-सी इमारत, बड़ा-सा कैम्पस। गाँव के एक कमरे में दो कक्षाओं वाले स्कूल से एकदम अलग। यहाँ एक कक्षा के चार-चार बैच अलग-अलग हॉल में लगते थे। हमारे लिए यह बहुत नया था। और तिस पर लड़के-लड़कियों का साथ बैठ जाना, साथ में खाना खाना तो एकदम ही अनोखा था। अनोखा और बहुत मीठा।

शहर गाँव से कोई सात-आठ किलोमीटर दूर था। हम साइकिलों से आया-जाया करते थे। स्कूल के पहले ही दिन पता चला कि एक लड़की भी साइकिल से किसी गाँव से आती है। अपने चार-पाँच दोस्तों के साथ। मेरे सारे दोस्त लड़के थे। उसके ग्रुप में लड़कियाँ और लड़के दोनों थे। वह हमेशा अकड़ में रहती। चलती इतना तेज़ कि उसके दोस्तों को उसके साथ चलने के लिए लगभग भागना पड़ता।

छठवीं कक्षा का पहला दिन था। मैं इधर-उधर देखता अपने भावी दोस्तों की शक्लें ढूँढ रहा था। वो मुझे सबसे अलग दिखी। शायद उसने भी मुझे देखा होगा। तभी तो मुँह बिचकाकर मुझे यूँ नज़रअन्दाज़ किया मानो कह रही हो – "तू कौन, खा म खा?" वो हमेशा लड़ने को तैयार रहती थी। ऐसी तेज़तर्रार लड़की मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। मैं उससे डरता था। पर उसे देखना मुझे अच्छा भी लगता था। पहले दिन जब हाज़िरी ली जा रही थी तो उसका नाम पता चला - सलमा। कक्षा पाँचवीं में मेरे और उसके लगभग बराबर नम्बर आए थे। उसे यह बात शायद सुहाई नहीं। उसने आँखें तरेरकर मुझे यूँ देखा, मानो कह रही हो - "इस बार तो टॉप मैं ही करूँगी।" तब से वो हर बात पर बहस करने लगी। वाद-विवाद प्रतियोगिता में कई सालों तक हम दोनों के बीच तगड़ा मुकाबला हुआ करता था। हमने न जाने कितनी प्रतियोगिताओं में एक-दूसरे के खिलाफ भाग लिया और मिलने वाले इनामों की संख्या में भी हार-जीत की।

स्कूल छठवीं से बारहवीं कक्षा तक था। हर क्लास में हमारा लड़ना जारी रहा। और साथ में खाना खाना भी। मुझे भिण्डी पहली बार उसने ही ज़बरदस्ती खिलाई थी। वह उसने पहली बार बनाई थी। उसे मैंने वॉली बॉल खेलना सिखाया तो उसने मुझे पिट्टू। खो-खो हमने साथ में सीखा। उसने मुझे अपनी चोटी में रिबिन बाँधना सिखाया। मैंने उसे जूते में अलग-अलग तरीके से फीते बाँधने की तरकीबें बताईं। उसकी अम्मी को पता होता था कि आज टिफिन का खाना मैंने खाया होगा या सलमा ने। मेरे यहाँ भी टिफिन तैयार करते समय सलमा की पसन्द-नापसन्द का खयाल रखा जाने लगा था।

छठवीं से हम कब दसवीं में पहुँच गए पता ही नहीं चला। ग्यारहवीं में मैंने गणित लिया और उसने बायो। मुझे एक बारगी को लगा कि बायो ही ले लूँ। पर नहीं लिया। अब हमारे मिलने का समय कम हो गया था। और बहस-झगड़े का भी।

इतने सालों में हमने इस बात पे कभी गौर नहीं किया कि हमारी साइकिलें एक-दूसरे के बगल में खड़ी रहती हैं। हम दोनों में से जो भी पहले स्कूल पहुँच जाता, वो दूसरे की साइकिल ढूँढकर उसी के बगल में अपनी साइकिल लगा देता। अगर जगह नहीं होती तो जगह बनाकर लगा देता। साइकिल निकालने के बहाने हम कम से कम स्कूल से निकलते वक्त थोड़ी बात कर लिया करते थे।

कुछ दिनों बाद सलमा की साइकिल कम दिखने लगी। मेरी साइकिल की बगल वाली जगह खाली रहती। कुछ दिनों में वह जगह किसी और साइकिल की हो गई। उसकी छोटी बहन से पता चला कि उसकी तबीयत आजकल खराब रहती है। कहीं बाहर आना-जाना लगभग न सा है। कुछ दिनों बाद मैं साइकिल से उसके घर चल दिया। उसके घर पहुँचकर मैंने उसकी साइकिल के बगल में अपनी साइकिल लगा दी। मैं

अन्दर घुसा। बाहर के कमरे में काफी लोग जमा थे। जगह देखकर मैं भी बैठ गया। वो बहुत कमज़ोर लग रही थी। बात भी मुश्किल से कर पा रही थी। उसे मैंने पहले कभी ऐसे नहीं देखा था। उसे यूँ देखना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। खाना-पीना भी बन्द कर दिया था। मैं गया तो उसने मेरे साथ चाय पी। वैसे नहीं पीती थी। फिर सो गई। मैंने उसकी साइकिल के पास से अपनी साइकिल सरकाई और एक नज़र उसकी साइकिल को देखा। कई दिनों बाद पता लगा कि सलमा को कैंसर हुआ है। और अब वो इतनी कमज़ोर हो गई है कि बात भी नहीं कर पाती। उसे कुछ कहना होता तो वो टूटे-फूटे अक्षरों में कागज़ पर लिखकर अम्मी की ओर बढ़ा देती।

कुछ दिनों के लिए मुझे मामा के यहाँ खण्डवा जाना था। मैं उससे मिलने गया। उस दिन काफी दिनों बाद उसने मेरे साथ चाय पी और एक चिट्ठी मुझे थमा दी। उसमें लिखा था – अब कब मिलेंगे पता नहीं, पर दोस्ती पक्की है।

खण्डवा से लौटकर मैं उसके घर गया। अपनी साइकिल खड़ी करने के लिए मैंने उसकी साइकिल ढूँढी। वो कहीं नहीं दिखी। वो कहीं नहीं थी।

आज इतने सालों बाद जब स्कूल गया तो देखा कि जहाँ मैं साइकिल लगाता था वहाँ पर दो साइकिलें थीं जो बिलकुल सलमा और मेरी साइकिल की तरह थीं! दोनों पक्की दोस्त थीं!

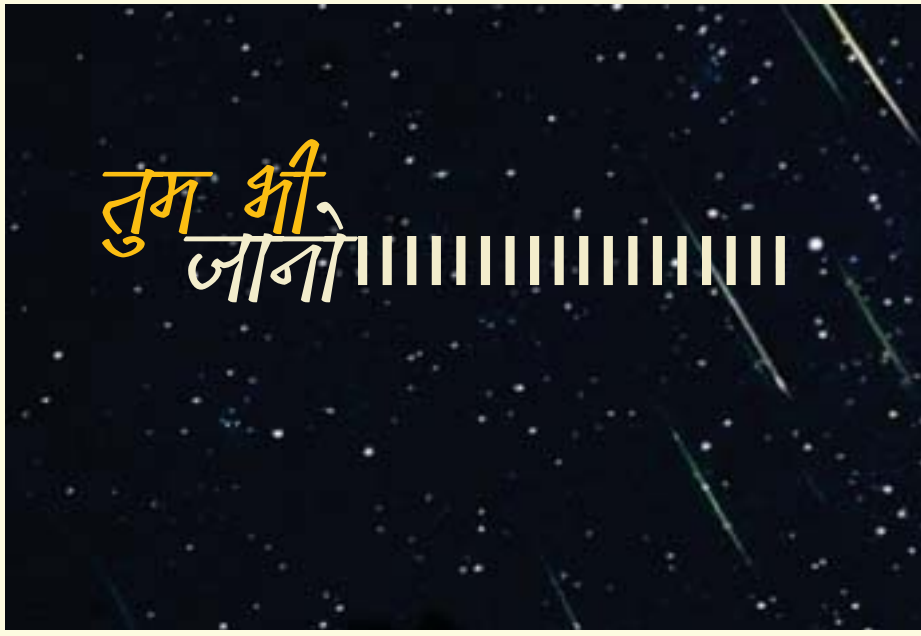

सबसे बड़ा जहाज़

जिस तरह देशों के बीच दुनिया की सबसे ऊँची बिल्डिंग बनाने की होड़ लगी रहती है, वैसे ही सबसे बड़ा जहाज़ बनाने की भी रेस लगी रहती है। सबसे बड़ा जहाज़ कौन-सा है यह उसकी लम्बाई-चौड़ाई पर आधारित नहीं होता। यह इस पर आधारित होता है कि वह कितना माल भर सकता है। इसकी इकाई टीईयू है यानी कि ट्वैंटी फीट कंटेनर यूनिट। इसका मतलब हुआ कि 20 फुट के कितने कंटेनर उसमें रखे जा सकते हैं। इस तरह का कंटेनर 6 मीटर लम्बा (और 2.5 मीटर चौड़ा व 3 मीटर ऊँचा) होता है जो हमारे एक सामान्य ट्रक जितना लम्बा होता है। आज की तारीख में सबसे बड़ा जहाज़ ओओसीएल हांगकांग है। इसमें 21.413 कंटेनर भरकर ले जा सकते हैं। इस जहाज़ की लम्बाई लगभग चार फुटबाल ग्राउंड जितनी है। और इसके रखरखाव का खर्चा इतना ज़्यादा है कि यह हर वक्त यात्रा पर रहता है।

देखो आसमान में उल्का बौछार

हर साल अप्रैल में रात को तुम्हें 'लिरिड' नाम की उल्का बौछार दिख सकती है। यह C/1861 G1 थैचर नामक धूमकेतू से निकले कणों से बनी होती है। हरेक मिनट में तुम लगभग 20 उल्काओं की बौछार देख सकते हो। वैसे तो तुम इसे हमारे आकाश में 14 से 30 अप्रैल तक देख सकते हो। लेकिन 22 अप्रैल की रात को यह सबसे बढ़िया दिखेगी। 21 अप्रैल को अमावस है तो इस साल यह बौछार अन्य सालों से साफ नज़र आएगी। यह तुम्हें लायरा तारामण्डल के आसपास दिखेगी और लगभग एक ही जगह से रोशनी की लकीरों जैसी दिखेगी। तो 22 अप्रैल की रात को जगे रहना और देखना यह अनोखा नज़ारा।

जलपरी

पिछले कुछ दिनों से एरियल नाम की एक जलपरी को लेकर काफी विवाद चल रहा है। अमेरिका के डिज़नी कार्टून फिल्म में 1989 में पहली बार दिखी इस जलपरी पर एक और फिल्म बनने जा रही है। हैली बेली नाम की कलाकार इस फिल्म में जलपरी की भूमिका निभाएगी। इस खबर की घोषणा होते ही ट्विटर पर #notmymermaid हैशटैग के साथ गुस्सैल सन्देश दिखने लग गए। यह इसलिए कि कार्टून की जलपरी गोरी है और उसके लाल बाल हैं। जबकि हैली बेली साँवली है और उसके काले बाल हैं। वैसे किसे पता कि जलपरियाँ कैसी दिखती हैं? हमें इतना पता है कि दुनिया भर की लोककथाओं में जलपरियों का ज़िक्र है - यूरोप, दक्षिण एशिया और अफ्रीका में भी। यहाँ की जलपरियाँ इन इलाकों के लोगों जैसी दिखती हैं। तो एरियल को लेकर यह जो विवाद है, सबकी समझ में नहीं आ रहा है।

तुम्हारा घर सिर्फ तुम्हारा नहीं

अपने घर में कीड़ों के संग रहना

मैथ्यू ऐलन बर्टोन
अनुवाद - भरत त्रिपाठी

युवा समीक्षक - अमेरिका के नेवादा राज्य के रैनो शहर में मिडिल स्कूल के 11-12 साल के बच्चे।

आर्थ्रोपॉड (सन्धिपाद) ऐसे जन्तु हैं जो दुनिया भर में पाए जाते हैं, रेगिस्तान से लेकर पहाड़ों की चोटियों तक और नीचे महासागरों के तलों तक। इनकी कुछ खास विशेषताएँ होती हैं - जैसे खण्डों में बँटा शरीर, बाह्य कंकाल और सन्धित पैर। इनके उदाहरण हैं कीड़े, मकड़ियाँ, घुन (माइट), केंकड़े और कनखजूरे।

हमें भृंग (बीटल), पतिंगे, मक्खियाँ, मकड़ियाँ जैसे आर्थ्रोपॉड उन सभी जगहों में मिलते हैं जहाँ हम रहते हैं। इनमें से कई तो हमारे साथ हमारे घरों में रहते हैं। यह पता करने के लिए कि किस तरह के आर्थ्रोपॉड हमारे घरों में रहते हैं हमने पूर्वी अमेरिका के कुछ घरों का सर्वे किया और हमें वहाँ कई रोचक जीव मिले।

साथ में रहने का एक इतिहास

हम मनुष्यों ने हमेशा से अपने लिए रहने के स्थान बनाए हैं। जैसे-जैसे रहने के ये स्थान स्थाई होते गए, ये घरों का रूप लेते गए। जब हम एक जगह रुककर रहने लगे, खाने का सामान इकट्ठा करके रखने लगे और साथ में मवेशी भी रखने लगे तो दूसरे जन्तुओं ने भी हमारे संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए हमारे ही घरों में अपना ठिकाना बनाना शुरू कर दिया। उदाहरण के लिए, बड़े-बड़े पीपों और मक्के या चावल की खुली बोरियों की तरफ भृंग खिंचे चले आते थे और खाने की इन चीज़ों पर पलते थे। हमारे घर उनके लिए ऐसे बढ़िया ठिकाने थे जहाँ उनके पास आहार की लगभग अन्तहीन जुगाड़ थी। तो इस तरह मनुष्यों और भृंग, पतिंगे, मक्खियों और मकड़ियों जैसे आर्थ्रोपॉड जीवों के बीच रिश्ते का सिलसिला चल पड़ा, और यह रिश्ता दसियों हज़ार साल से चला आ रहा है। हमें यह पता है क्योंकि प्राचीन घरों की पुरातात्विक खुदाइयों में कई कीड़े भी मिले हैं।

तुम्हारे किचन में क्या है?

हमारे घरों में जिस एक जगह आर्थ्रोपॉड पाए जा सकते हैं वह है हमारा खाना। प्राचीन स्थानों से पाई गई आर्थ्रोपॉड की कई प्रजातियाँ आज भी हमारे घरों में, और उसी तरह की खाने की चीज़ों में पाई जा सकती हैं। घुन, अनाज भृंगी, आटा भृंगी और कई तरह के पतिंगे भी हमारे खाने की चीज़ें, यहाँ तक कि चॉकलेट खाकर पलते हैं।

फल मक्खी (फ्रूट फ्लाई) किचन में पाए जाने वाले आर्थ्रोपॉड का एक और समूह है। हालाँकि ऐसा प्रतीत होता है कि वे फल की तरफ आकर्षित होकर किचन में आती हैं पर असल में वे सड़ रहे खाने की तरफ आकर्षित होकर आती हैं। मक्खियों के लार्वा खमीर, फफूँद और सड़ रही सब्ज़ियों में पल रहे कीटाणुओं को खाते हैं। जी हाँ, ये सूक्ष्म जीव भी तुम्हारे घर में रहते हैं। यानी तुम्हारे घर में न सिर्फ थोड़े बड़े जीव रहते हैं बल्कि एक पूरा आहार जाल वहाँ मौजूद रहता है। इसमें सूक्ष्म जीव भी शामिल हैं।

फर्श और कालीनों के आसपास रेंगते हुए

अगर तुम अपने घर के आसपास ध्यान से देखो, अपने कालीन के रेशों और कमरे के कोनों में तलाशो तो पक्के में तुमको लार्वा के रूप में कालीन भृंग (कारपेट बीटल) दिखाई दे जाएँगे। हमने जिन 50 घरों में ये सर्वे किया, उन सभी में हमें ये कीड़े मिले। इन्हें कालीन भृंग इसलिए कहा जाता है क्योंकि ऊन और जानवर के फर इनकी पसन्दीदा खुराक हैं और हम इन्हीं चीज़ों से कालीन बनाया करते थे। ये कीड़े उन नए, कृत्रिम रेशों को नहीं खाते जिनसे आजकल के कालीन बनते हैं। लेकिन इन्हें हमारे घरों में पर्याप्त मात्रा में बाल, पंख, नाखून, मरे हुए कीड़े और खाने के अन्य सामान मिल जाते हैं जिन्हें खाकर ये लम्बे समय तक वहाँ बने रहते हैं। हो सकता है तुम्हें कोई खाता हुआ लार्वा दिखाई न पड़े लेकिन बसन्त के मौसम में घर से बाहर जाने की कोशिश में खिड़कियों की चौखटों पर बैठे छोटे आकार के रंग-बिरंगे वयस्क कीड़ों को तुम अक्सर देख सकते हो। तुमको अपने घरों में सिलवरफिश और बुकलाइस भी दिखाई दे सकती हैं क्योंकि वे भी यही सब चीज़ें खाती हैं। और ये बच्चे पैदा करके लम्बे समय तक हमारे घरों में अपनी आबादी को बनाए रख सकती हैं।

बाथरूम के साथी

बाथरूम में सिंक, टॉयलेट और शावर होने की वजह से वहाँ घर के दूसरे कमरों की तुलना में ज़्यादा नमी होती हैं। कुछ खास तरह के आर्थ्रोपॉड के लिए नमी वाला यह वातावरण बहुत अनुकूल होता है। यहाँ तुमको नाली मक्खी (ड्रेन फ्लाई) अक्सर दिख सकती है क्योंकि इनके लार्वा पाइपों में रहते हैं और उस जैविक पदार्थ को खाकर पलते रहते हैं जो ऐसी जगहों में जमता जाता है। तुम अपने बाथरूम की दीवारों पर गश्त लगाते छोटे-छोटे रोएँदार वयस्क कीड़ों को देखते होगे। छोटे, उछल-कूद करने वाले स्प्रिंगटेल नाम के आर्थ्रोपॉड भी बड़ी संख्या में बाथरूम में दिखाई देते हैं। ये भी बाथरूम में मौजूद नमी की वजह से पनपते हैं। ये हमारे घरों में ही प्रायः पाए जाने वाले एक अन्य प्रकार के जीव, फफूँद, को खाते हैं।

मकड़ियाँ हर जगह फैली हुई हैं पर ये कोई बुरी बात नहीं है

अभी तक जितने आर्थ्रोपॉड की चर्चा हुई है वे नुकसान न पहुँचाने वाले प्रतीत हो सकते हैं या ज़्यादा से ज़्यादा हम उन्हें नाशीजीव मान सकते हैं। नाशीजीव मनुष्यों को किसी न किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाते

हैं या मनुष्यों की गतिविधियों में या उनकी सम्पत्ति (जैसे पालतू जानवर, ढोर-डंगर या पेड़-पौधे) के लिए समस्याएँ पैदा करते हैं। इन्हें देखकर हमें चिढ़ होती है।

लेकिन मकड़ियाँ बहुत-से लोगों में डर पैदा करती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि तकरीबन सभी मकड़ियाँ विषैली होती हैं, और कुछ के डंक इतने बड़े होते हैं कि वे मनुष्यों को काट सकती हैं। हालाँकि कुछ प्रजातियों को छोड़कर बाकी मकड़ियाँ नुकसान नहीं पहुँचातीं। मनुष्यों का सामना करने से बचती हैं और नाशीजीवों व परजीवियों (जो अपना पोषण दूसरे जीवों के खून या माँस से प्राप्त करते हैं) के शिकारी के रूप में हमारे लिए दरअसल फायदेमन्द होती हैं।

यह अच्छी खबर है क्योंकि हमारे अध्ययन में मकड़ियों के दो कुल, मकड़जाल मकड़ी (कॉबवेब स्पाइडर) और बेसमैंट मकड़ी (सैलर स्पाइडर), क्रमशः 100 और 84% घरों में पाए गए। हमने जितने कमरों का सर्वे किया उनमें से 65% कमरों में मकड़जाल मकड़ियों के होने के सबूत मिले। मकड़ियाँ बहुत लम्बे समय तक भी कुछ खाए बिना रह सकती हैं, और हमारे घरों में उनके लिए रहने की आदर्श स्थितियाँ न होने के बावजूद वे वहाँ रह सकती हैं।

मकड़ियाँ हमारे घरों की आदी हो जाने वाली अकेली परभक्षी नहीं हैं। कनखजूरे भी ऐसे ही परभक्षी जीव हैं और उनसे तो लोगों को और भी ज़्यादा डर लगता है। कई पैरों वाले ये आर्थ्रोपॉड सही मात्रा में नमी होने पर घर के भीतर खूब पनप सकते हैं। उनकी चलने की बहुत तेज़ रफ्तार और बड़े आकार (1 इंच से अधिक) की वजह से भी वे लोगों के लिए थोड़े डरावने हो सकते हैं। लेकिन ये कनखजूरे बिलकुल आक्रामक नहीं होते और इन्हें कॉकरोच और मक्खियों जैसे शिकार खूब भाते हैं।

घर में रहने वाली परजीवी और नाशीजीव

हमारे घरों में रहने वाले सभी आर्थ्रोपॉड हमारी जूठन या फिर दूसरे आर्थ्रोपॉड को नहीं खाते। इनमें से कुछ हम पर या फिर हमारे पालतू जानवरों पर पलते हैं।

बहुत-से परजीवी कशेरुकी जीवों के खून से अपना पोषण करते हैं। घरों में ऐसे परजीवी हमें सबसे ज़्यादा पिस्सू (बिल्लियों और कुत्तों को निशाना बनाने वाले) या खटमलों के रूप में देखने को मिलते हैं। खटमलों की तादाद हाल के वर्षों में काफी बढ़ी है। दुनिया के कुछ हिस्से ऐसे हैं जहाँ घरों में किसिंग बग भी रहते हैं। रात में बाहर निकलकर हमारा खून चूसते हैं। ये कीड़े बहुत घातक बीमारियाँ भी फैला सकते हैं। कुछ परजीवी भले ही घर के भीतर न रहते हों पर ये हमारे पीछे-पीछे घरों में चले आते हैं जैसे मच्छर और किलनी।

घरों में आर्थ्रोपॉड नाशीजीवों का होना दूसरी वजहों से भी स्वास्थ्य के लिए बुरा हो सकता है। गोबर या इसी तरह के सड़ते हुए पदार्थों में पनपने वाली

मक्खियाँ, जिन्हें गन्दगी मक्खी (फिल्थ फ्लाई) कहा जाता है, खाने की चीज़ों और दूसरी जगहों पर बैठती हैं और इस तरह ये हमारे भीतर हानिकारक सूक्ष्मजीवों को पहुँचा सकती हैं। शायद घर में रहने वाला सबसे जाना-माना नाशीजीव समूह कॉकरोचों का है। इनकी एक प्रजाति, जर्मन कॉकरोच, घरों में रहने का इतना आदी है कि वह बाहर प्रकृति में पाया ही नहीं जाता। गन्दे और खिजाऊ होने के अलावा कॉकरोचों के पेट में ऐसा प्रोटीन पैदा होता है जिसे जब वे बाहर छोड़ते हैं तो वह ऐलर्जी पैदा करता है। इससे मनुष्यों में दमा जैसी गम्भीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

अन्त में

भले ही तुम्हारा घर ऐसे आर्थ्रोपॉड जीवों से भरा पड़ा हो जिनका इस लेख में ज़िक्र किया गया है, लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि तुम गन्दगी भरा जीवन जी रहे हो या फिर ये जन्तु तुम्हारी ज़िन्दगी पर कब्ज़ा कर रहे हैं। इसके विपरीत, इन आर्थ्रोपॉड का तुम्हारे घर में होना बहुत स्वाभाविक है, और अगर तुम इन सबका वज़न लोगे तो इनका कुल जैवभार बहुत ही कम निकलेगा।

इसके अलावा, हमें अपने सर्वे में जहाँ कई आर्थ्रोपॉड ऐसे मिले जो घरों में रहने के बखूबी अभ्यस्त थे, वहीं ऐसे भी बहुत-से आर्थ्रोपॉड मिले जो बाहर के परिवेश से अनायास ही घरों में चले आए थे। ये अस्थाई मेहमान अक्सर घरों में आकर फँस जाते हैं, और या तो परभक्षियों के शिकार बन जाते हैं या फिर मरकर मुर्दाखोरों का आहार बन जाते हैं। इनके शरीर घर के भीतर रहने वाले जीवों के लिए आहार का एक महत्वपूर्ण ज़रिया बन जाते हैं।

यह बहुत सम्भव है कि तुम्हें कई दिनों तक तुम्हारे घर में रहने वाले अधिकांश आर्थ्रोपॉड दिखाई न दें। फिर भी यह घरों के भीतर रहने वाला जीवों का ऐसा समुदाय है जो लम्बे समय से मनुष्यों के साथ जीता आया है और सम्भवतः जब तक मनुष्य घर बनाते रहेंगे तब तक ये जीव उनमें फलते-फूलते रहेंगे। अगर तुम्हारे घरों में नाशीजीव की कोई प्रजाति मौजूद है तो उन्हें पेशेवर लोगों की मदद से नियंत्रित किया जा सकता है। लेकिन आर्थ्रोपॉड के ज़्यादातर समूह ऐसे हैं कि बेवजह अपने घर में पाए जाने पर उन्हें बस तुम ज़िन्दा पकड़कर बाहर छोड़ सकते हो।

यह लेख फ्रन्टियर्स फॉर यंग माइण्ड्स वैबसाइट पर 8 सितम्बर 2019 को प्रकाशित हुआ था। इसे तुम अंग्रेज़ी में यहाँ पढ़ सकते हो - https://kids.frontiersin.org/article/10.3389/frym.2019.00122

फ्रन्टियर्स फॉर यंग माइण्ड्स एक ऑनलाइन विज्ञान पत्रिका है जिसमें वैज्ञानिक बच्चों के लिए अपने शोध के बारे में लिखते हैं और उन लेखों का सम्पादन खुद बच्चे करते हैं।

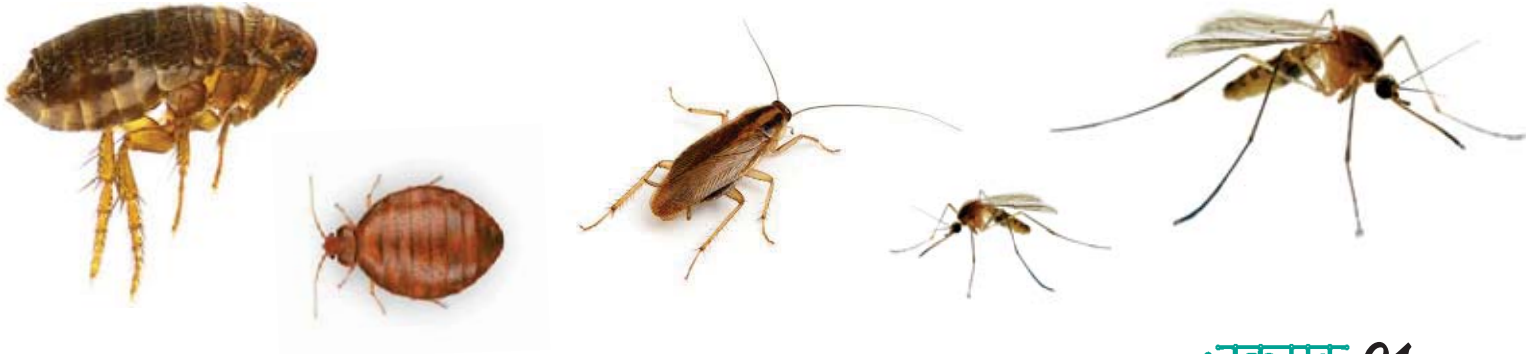

मेरा पन्ना

प्रकृति ही तो है

सौम्या तिवारी
दसवीं, ग्रेफाइट हायर सैकेण्डरी स्कूल, मण्डीदीप
मध्य प्रदेश

जब भी उदास होती हूँ मैं
तो छू लेना चाहती हूँ हवा को
मेरे डर को दूर करने में
यही करेगी मदद

नहीं मालूम क्या
पर कुछ तो है वहाँ
जो देती है मुझे खुशी
और जगाती है मुझे

इस धरती की खूबसूरती
प्रकृति से ही तो है
ये बहती नदियाँ,
और अन्य जीव
फूलों की खुशबू
और लहराते पेड़
घास पर बिखरी ओस की बूँदें
लगती हैं ऐसे
कह रही हों जैसे
एक और मौका है तेरे पास
सच में यह प्रकृति ही तो है
जिसने मुझे
अपने गुस्से को दूर भगाना सिखाया है

मेरा तोता

अनजान

एक बार मेरे जन्मदिन पर मेरे पापा एक तोता लेकर आए। हम सब बहुत खुश थे। हम लोग उसे समय-समय पर खाने-पीने की चीज़ देते थे। रोज़ मेरे दादाजी उसके पिंजरे को साफ करते थे। हम लोग भी उनकी मदद करते थे। हम लोग उससे रोज़ बात करने की कोशिश करते थे। मैं भी उसे रोज़ मिट्ठू-मिट्ठू बोलना सिखाता था। पर वह कुछ नहीं बोलता था। और बहुत उदास रहता था। मुझे उस पर बहुत गुस्सा आने लगा। मैं मिट्ठू से बोला, "तुम बहुत बुरे हो। मैं तुमसे इतना प्यार करता हूँ और तुम हमेशा उदास रहते हो।" पर मिट्ठू कुछ नहीं बोला। उस रात मैंने एक सपना देखा कि मैं एक कमरे में बन्द हो गया हूँ। वह कमरा बिलकुल मिट्ठू के पिंजरे जैसा था। और मिट्ठू मुझे बोल रहा था कि गाना गाओ। उस पिंजरे में बहुत सारी टॉफी और खिलौने थे। पर मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। मुझे सिर्फ अपने घर की याद आ रही थी और मैं अपने घर जाना चाह रहा था। इतने में मेरी नींद टूट गई। तब मुझे समझ में आया कि तोता इतना उदास क्यों रहता था। मैं उठकर तोते के पास गया और बोला, "मिट्ठू मुझे माफ कर दो।"

चित्र: प्रेक्षा, तीसरी, द हेरीटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

चित्र: रजिना, बड्स व निरन्तर संस्था, दिल्ली

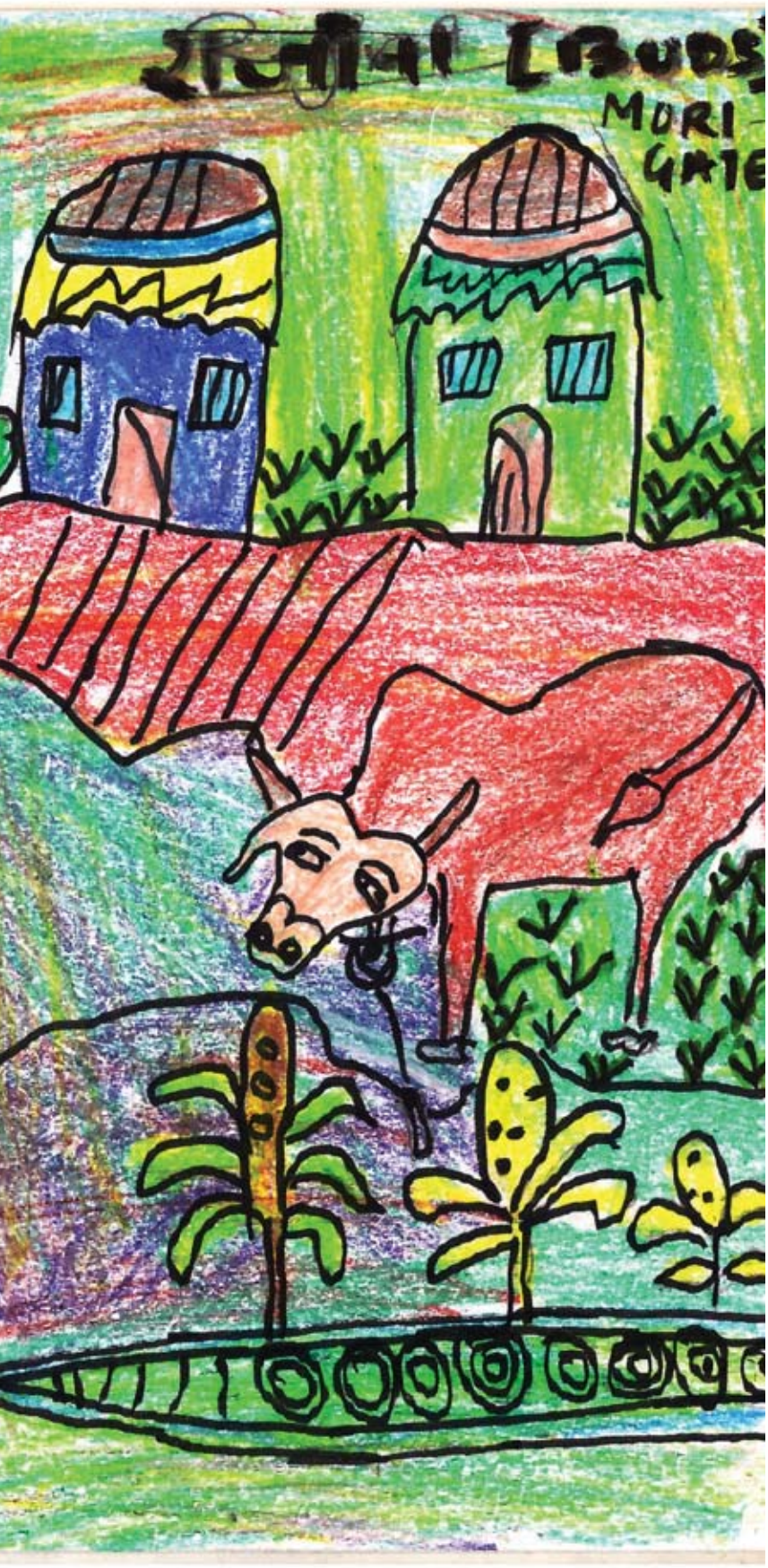

मेरा पन्ना

मेरी नई पहल

सूरज रैगर, नौवीं
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बमोर, टोंक, राजस्थान

बचपन में मेरी मम्मी स्कूल जाना चाहती थीं। मगर आर्थिक स्थिति सही नहीं होने के कारण यह इच्छा, इच्छा ही बनकर रह गई। मेरे मामाजी ने मेरी मम्मी को क, ख, ग... व्यंजन पढ़ना-लिखना सिखाया था। जब हमारी मम्मी हमें पढ़ाई करते हुए देखतीं तो वह भी हमारे साथ किताब पढ़ने की कोशिश करतीं। एक दिन मैंने सोचा क्यों ना इस कोशिश को आगे बढ़ाया जाए। शाम के समय जब मेरी मम्मी बकरी को बाड़े में बाँधना, खाना बनाना, खाना आदि सारे कामों से फ्री हो जाती हैं तो मैं उन्हें अपनी लिखी छोटी-छोटी कहानियाँ पढ़ाने की कोशिश करता हूँ। वह अक्षरों को पहचानकर धीरे-धीरे पढ़ने की कोशिश करती हैं। बीच-बीच में मैं उनको पढ़ने में मदद करता हूँ। पहले के मुकाबले अब वह काफी अच्छी लय से कहानियाँ पढ़ पाती हैं। पढ़ते समय उनके चेहरे पर जो खुशी झलकती है उससे लगता है कि उनकी इच्छा पूरी हो रही है।

Kilkary
KA भोजन
मेला

चित्र: रितेश रोशन, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

स्कूल के सामने की घटना

सिया
पाँचवीं
केन्द्रीय विद्यालय
देवास, मध्य प्रदेश

बचपन में एक दिन मेरे स्कूल के सामने एक भैया तेज़-तेज़ मोटर गाड़ी चला रहे थे। तभी एक पहली क्लास की बच्ची उनके सामने आ गई। वो मोबाइल में बात कर रहे थे। उन्होंने उस बच्ची को ठोकर मार दी। वो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। अच्छा हुआ कि उस लड़की के वैन वाले भैया आ गए। और फिर उन्होंने उस बच्ची को घर छोड़ दिया।

माथापच्ची

1.

क्या तुम्हें इस चित्र में कोई गलती नज़र आ रही है?

2.

एक माँ और बेटी बाज़ार गए। दुकानदार ने उस बच्ची से तीन सवाल किए:

1. सुबह तुमने नाश्ते में क्या खाया?
2. तुम्हारे पापा क्या काम करते हैं?
3. तुम्हें क्या सामान चाहिए?

बच्ची ने तीनों सवालों का एक ही जवाब दिया। बताओ क्या?

3.

सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। कौन-सा?

.........सिंह नाम का एक व्यक्ति .... खरीदने के लिए ....घर गया। जब वो वहाँ पहुँचा तो अचानक उसे .... बजने की आवाज़ सुनाई दी। उसने एक .... लगाकर वहाँ से एक .... खरीदा और घर लौट आया।

4.

चारों में से पेड़ की सही परछाईं कौन-सी है?

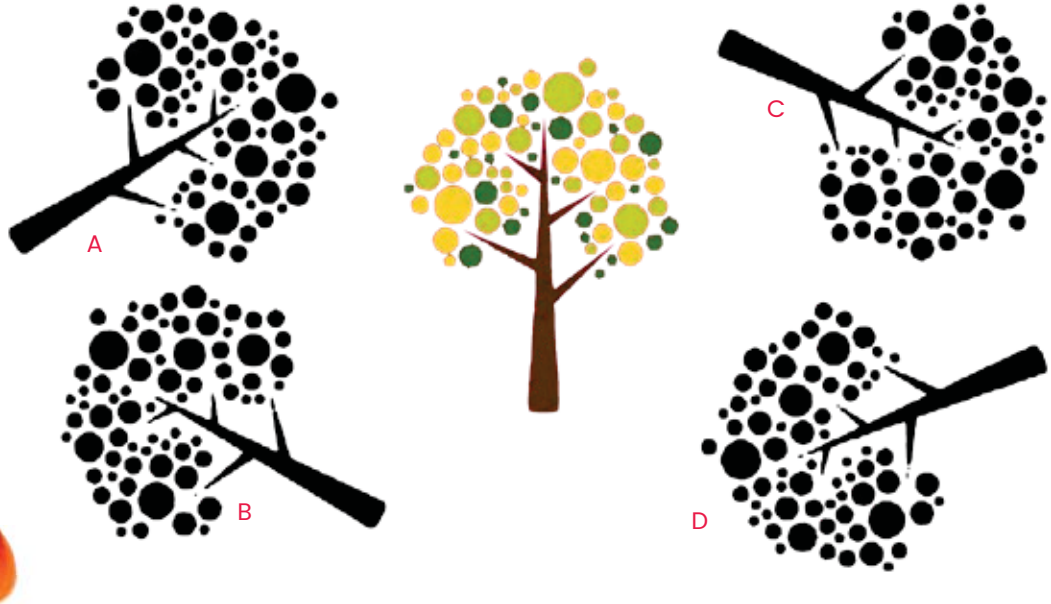

5. यदि तुम दिल्ली से कलकत्ता जा रहे हो तो रास्ते में कितने मोड़ मिलेंगे?

6. क्या तुम लाल रंग की स्याही वाले पेन से नीला लिख सकते हो?

7. क्या है जिसे रोशनी में नहीं देख सकते?

8. क्या है जो चाहे जितनी भी चले, पर थकती नहीं है?

9. वह क्या है जो तुम्हारे कुछ भी कहने से एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं?

10. 1 किलो रूई और 1 किलो लोहे में से क्या भारी होगा?

फटाफट बताओ

देह सख्त है पत्थर-सी
ऐसी है एक रानी
लेकिन इतनी शर्मीली
हाथ में लो तो पानी-पानी

(बर्फ)

पैदा होऊँ तो हरी-हरी मैं
बड़ी होऊँ तो लाल
पेट में रखती मोती माला
देखो मेरा कमाल

(मिर्च)

दो अक्षर का मेरा नाम,
उलटा-सीधा एक समान
दवा, तेल कुछ भी भर लो
अब बतलाओ मेरा नाम

(शीशी)

देखो भाई अजब-सी बात
नीचे फल और ऊपर घास

(मूँगफली)

भूलभुलैया जवाब

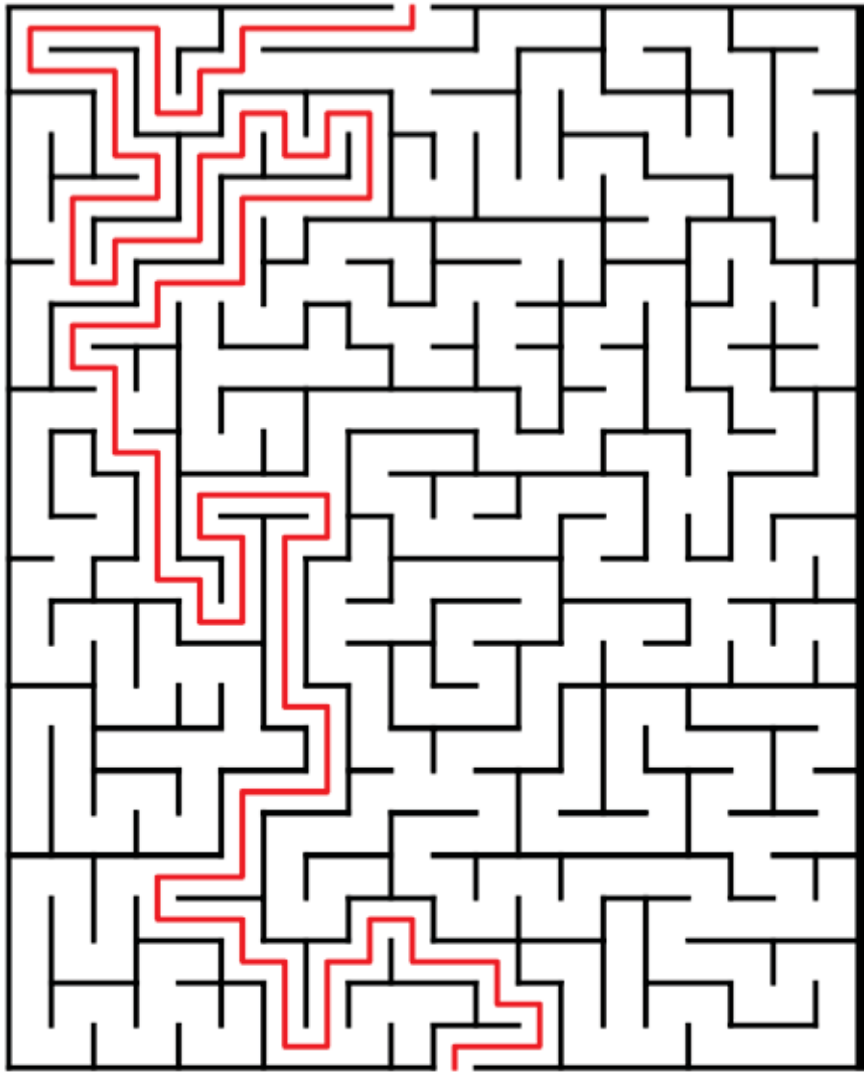

सुडोकू-29

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

		3	7			8		4
		5		2			6	
4		1	8		9	3	2	7
	4	8	3		2		1	
6							8	
5		7			1	4	9	2
7	5		9	6	8	2	3	
				4			7	
					7	6		5

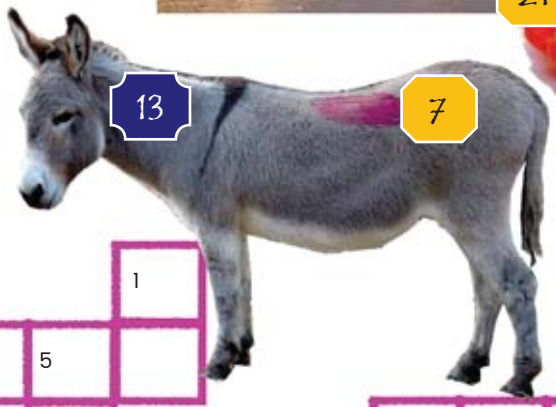

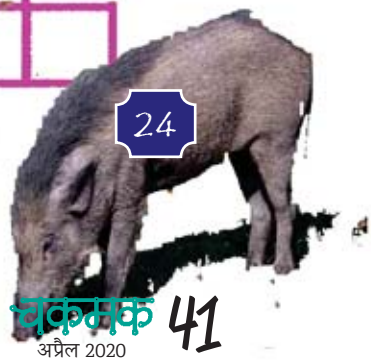

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

तीन हज़ार साल पुराना शव बोला!

तुम सोच रहे होगे कि कोई मृत व्यक्ति कैसे बोल सकता है। लेकिन हाल ही में वैज्ञानिकों ने एक ऐसी ऑडियो क्लिप रिलीज़ की है जिसमें उन्होंने एक मृत व्यक्ति की आवाज़ रिकॉर्ड की है। दरअसल यह जिस मृत व्यक्ति की आवाज़ है वह 3000 साल पुरानी मिस्र की एक ममी है। इसका नाम नेसियामुन रखा गया है।

हर व्यक्ति की अलग आवाज़ के लिए ध्वनि मार्ग (वोकल ट्रैक्ट) की लम्बाई-चौड़ाई ज़िम्मेदार होती है। इसलिए वैज्ञानिकों ने ममी की आवाज़ को पुन:निर्मित करने के लिए ममी का सीटी स्कैन किया। और उसके ध्वनि मार्ग के आकार की माप हासिल कर ली। इसकी मदद से उन्होंने नेसियामुन के ध्वनि मार्ग का एक त्रि-आयामी मॉडल बनाया। फिर इसे इलेक्ट्रॉनिक स्वर यंत्र (कृत्रिम लैरिंक्स) से जोड़ा जिसने ध्वनि मार्ग के लिए ध्वनि के स्रोत की तरह कार्य किया। इस सेटअप से वैज्ञानिकों ने नेसियामुन की आवाज़ पैदा की। हालाँकि जो आवाज़ वे पैदा कर पाए हैं वो भेड़ के मिमियाने जैसी सुनाई पड़ती है। लेकिन इससे यह अन्दाज़ लगता है कि नेसियामुन की आवाज़ कैसी होगी।

नेसियामुन के ताबूत पर लिखी जानकारी और उसके साथ दफन चीज़ों के आधार पर वैज्ञानिक बताते हैं कि वह एक मिस्री पादरी और मुंशी थे। सम्भवत: वह गुनगुनाते रहे होंगे और भगवान से बातें करते रहे होंगे। यह उनके धार्मिक कामकाज का ही हिस्सा रहा होगा। उनके ताबूत पर लिखी इबारत से पता चलता है कि नेसियामुन की इच्छा थी कि वह भगवान के दर्शन करें और उससे बातचीत करें, जैसा कि वह अपने जीवनकाल में भी करते रहे थे। शुक्र है आधुनिक टेक्नोलोजी का, अब मरने के बाद, वह हम सबसे बातें कर पा रहे हैं।

स्रोत फीचर्स से साभार

माथापच्ची जवाब

1. दोनों गुलाबी जूते बाएँ पैर के हैं।

2. कुछ नहीं

3. घण्टा।

4. C वाली परछाई सही है।

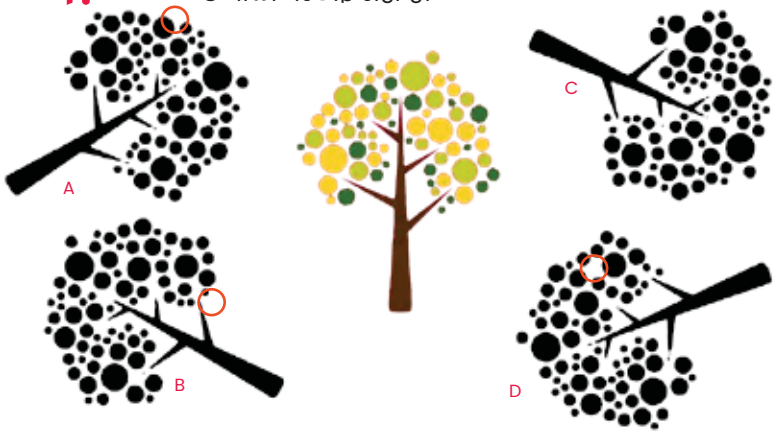

5. सिर्फ दो, दायाँ और बायाँ।

6. हाँ, नीला

7. अँधेरा

8. घड़ी

9. होंठ

10. दोनों बराबर होंगे क्योंकि दोनों का वज़न 1 किलो ही है।

मार्च की चित्रपहेली का जवाब

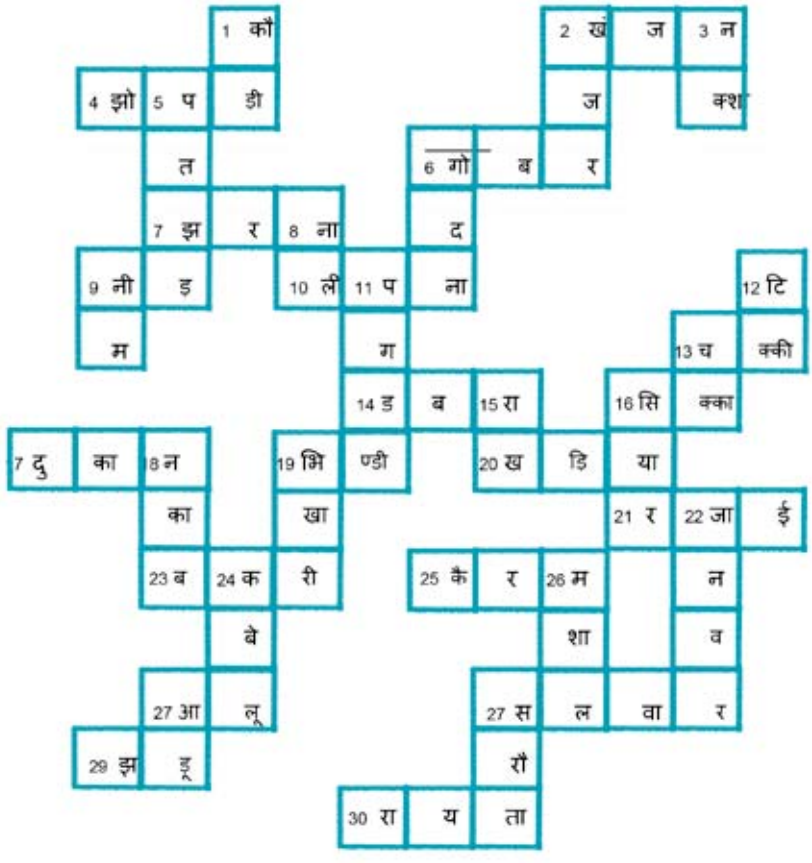

सुडोकू-28 का जवाब

8	5	9	2	3	6	7	4	1
3	2	1	4	7	8	5	6	9
7	6	4	9	5	1	3	8	2
5	3	8	7	1	4	2	9	6
9	7	2	8	6	5	1	3	4
4	1	6	3	9	2	8	7	5
2	8	3	5	4	9	6	1	7
6	4	7	1	2	3	9	5	8
1	9	5	6	8	7	4	2	3

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20

बागीचे में आए बन्दर

हर्षवर्धन कुमार
चित्र: सुविधा मिस्त्री

उस दिन सुबह जब बागीचे में
देखे मैंने पेड़ों पर बन्दर।
इधर-उधर वे कूद रहे थे,
खाने को फल ढूँढ रहे थे।
एक डाल से दूजी डाल,
मचा रहे थे खूब धमाल।
माली ने जब उन्हें भगाया,
खों-खों करके उसे चिढ़ाया
उछल-कूदकर सारे भागे,
माली पीछे, बन्दर आगे।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म प्र से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन